CFM 24 x 7 COALFIELD MIRROR

कोलफील्ड मिरर

Website : coalfieldmirror.com

हर पल आपके साथ

कोलकाता | मंगलवार 05 अगस्त 2025 | वर्ष– 8 | अंक– 1447 | पृष्ठ– 6 | T/WB/2025/0130/2064/1269

बांग्ला बांग्लादेशियों की भाषा, दिल्ली पुलिस की चिट्ठी पर भड़कीं सीएम ममता

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (कोलकाता): दिल्ली पुलिस के एक कथित लेटर में बांग्ला भाषा को कथित तौर पर 'बांग्लादेशी' कहने से मचा बवाल अब तूल पकड़ रहा है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इसे 'असंवैधानिक' और 'राष्ट्र-विरोधी' करार दिया है। वहीं, बीजेपी नेता अमित मालवीय ने ममता पर पलटवार करते हुए कहा कि उनकी प्रतिक्रिया 'खतरनाक' और 'भड़काऊ' है। मालवीय ने तो ममता के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत कार्रवाई की मांग तक कर डाली। इस विवाद ने देश में भाषाई और राजनीतिक तनाव को और हवा दे दी है।

अमित मालवीय ने कहा कि दिल्ली पुलिस ने बंगाली को 'बांग्लादेशी' नहीं कहा, बल्कि यह शब्द अवैध घुसपैठियों की पहचान के लिए इस्तेमाल हुआ। उन्होंने दावा किया कि बांग्लादेश में बोली जाने वाली भाषा का लहजा, शब्दावली और बोली भारतीय बंगाली से अलग है।

ममता बनर्जी ने रविवार को दिल्ली पुलिस पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर दिल्ली

पुलिस का एक लेटर साझा करते हुए लिखा, "यह कितना शर्मनाक है कि दिल्ली पुलिस बंगाली को 'बांग्लादेशी' भाषा कह रही है।"

उन्होंने लिखा, "बंगाली हमारी मातृभाषा है, रवींद्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानंद की भाषा है। यह वह भाषा है, जिसमें हमारा राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत लिखा गया है। इसे बांग्लादेशी कहना संविधान का अपमान है।"

अमित मालवीय ने ममता के बयान को 'गैर-जिम्मेदाराना' करार दिया। उन्होंने एक्स पर लिखा, "दिल्ली पुलिस ने कहीं भी बंगाली को बांग्लादेशी भाषा नहीं कहा। यह शब्द घुसपैठियों की भाषाई पहचान के लिए इस्तेमाल हुआ, जिसमें बांग्लादेश की बोलियों जैसे सिलहटी का जिक्र है, जो भारतीय बंगाली से अलग है।" मालवीय ने कहा कि ममता का बयान भाषाई तनाव को भड़काने वाला है और इसके लिए उन्हें एनएसए के तहत जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि दिल्ली पुलिस का 'बांग्लादेशी भाषा' कहना अवैध प्रवासियों की पहचान के लिए एक संक्षिप्त शब्द था, न कि पश्चिम बंगाल में बोली जाने वाली बंगाली भाषा पर टिप्पणी।

इस बीच, माकपा नेता मोहम्मद सलीम ने भी दिल्ली पुलिस को आड़े हाथों लिया। उन्होंने एक्स पर लिखा, "दिल्ली पुलिस को क्या 'बांग्लादेशी भाषा' का मतलब भी पता है? क्या उन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची की जानकारी नहीं, जिसमें बंगाली को मान्यता दी गई है?" सलीम ने दिल्ली पुलिस को 'अशिक्षित' तक कह डाला।

कल्याण बनर्जी ने पार्टी के चीफ व्हिप पद से दिया इस्तीफा

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (कोलकाता): तृणमूल कांग्रेस के सांसद कल्याण बनर्जी ने एक पॉडकास्ट में की गई टिप्पणी को लेकर अपनी ही पार्टी की सांसद महुआ मोइत्रा पर निशाना साधा है. महुआ मोइत्रा ने इस पॉडकास्ट में कल्याण बनर्जी को सूअर तक कह दिया था. कल्याण बनर्जी ने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि एक साथी सांसद की तुलना सुअर से करने जैसी भाषा का इस्तेमाल करना न केवल दुर्भाग्यपूर्ण है, बल्कि नागरिक संवाद के बुनियादी मानदंडों को भी दर्शाता है.

कल्याण बनर्जी ने कहा, "जो लोग गाली-गलौज करते हैं उन्हें ये तय करना चाहिए कि वे किस तरह की राजनीति कर रहे हैं. इससे पता चलता है कि वे कितने खोखले हैं. जब कोई जनप्रतिनिधि गाली-गलौज और अभद्र भाषा का इस्तेमाल करता है तो यह उसकी ताकत नहीं, बल्कि असुरक्षा का प्रतीक है."

टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी ने महुआ मोइत्रा की बीजेडी नेता पिनाकी मिश्रा से शादी करने को लेकर निशाना साधा था. इसके बाद इंडिया टुडे के एक पॉडकास्ट में महुआ मोइत्रा ने कहा, "आप सुअर से कुश्ती नहीं लड़ते क्योंकि

सुअर को यह पसंद है कि आप गंदे हो जाएं. भारत में महिला विरोधी, सेक्सुअली फ्रस्टेटड और भ्रष्ट पुरुष है, जिनका प्रतिनिधित्व सभी पार्टियों में है."

इस पर कल्याण बनर्जी ने कहा, "मैंने जो कहा वह सार्वजनिक जवाबदेही और व्यक्तिगत आचरण के सवाल थे. जिनका सामना करने के लिए हर सार्वजनिक हस्ती को तैयार रहना चाहिए चाहे वो पुरुष हों या महिला. किसी पुरुष सहकर्मी को सेक्सुअली फ्रस्टेटड कहना कोई साहस की बात नहीं है. यह सरासर गाली है. अगर ऐसी भाषा किसी महिला के लिए इस्तेमाल की जाती तो देश भर में गुस्सा फैल जाता और यह जायज भी है. हालांकि जब कोई पुरुष इसका शिकार होता है तो इसे खारिज कर दिया जाता है या फिर सराहा जाता है."

कल्याण बनर्जी ने कहा, "ऐसे बयान न केवल अभद्र हैं, बल्कि दोहरे मानदंड को भी मजबूत करती हैं. जहां पुरुषों से चुपचाप सहने की उम्मीद की जाती है तो वहीं अगर महिला से ऐसा कहा जाए तो कभी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. अगर महुआ मोइत्रा सोचती हैं कि गंदी गालियां देने से उनकी नाकामियां छिप जाएंगी या उनसे गंभीर सवाल नहीं पूछे जाएंगे तो वह खुद को धोखा दे रही हैं. जो लोग जवाब देने के बजाय गालियों पर भरोसा करते हैं वे लोकतंत्र के चैंपियन नहीं हैं. इस देश की जनता उनकी इस हरकत को समझ सकती है."

न्यूज एजेंसी पीटीआई की रिपोर्ट के मुताबिक तृणमूल कांग्रेस सांसद कल्याण बनर्जी ने लोकसभा में पार्टी के मुख्य सचेतक (चीफ व्हिप) के पद से इस्तीफा दे दिया. उनका इस्तीफा पार्टी सहयोगी महुआ मोइत्रा और उनके बीच कथित तकरार के बीच आया है. कल्याण बनर्जी ने अपने इस्तीफे की घोषणा पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी की अध्यक्षता में तृणमूल सांसदों की डिजिटल तरीके से आयोजित एक बैठक में भाग लेने के बाद की.

अभिषेक बनर्जी होंगे लोकसभा में तृणमूल कांग्रेस के नए नेता

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (कोलकाता): तृणमूल कांग्रेस ने सोमवार को अपने राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी को लोकसभा में अपनी पार्टी का नया नेता नियुक्त किया है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, अभिषेक बनर्जी ने अनुभवी सांसद सुदीप बंदोपाध्याय की जगह ली है, जो अस्वस्थ हैं। सुदीप बंदोपाध्याय को स्वास्थ्य कारणों से इस जिम्मेदारी से मुक्त किया गया है।

डायमंड हार्बर से तीन बार के सांसद अभिषेक बनर्जी, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे हैं। यह फैसला पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी की अध्यक्षता में हुई टीएमसी सांसदों की एक वर्चुअल बैठक में लिया गया, जिसमें

लोकसभा और राज्यसभा दोनों सदनों के सांसद शामिल थे। 29 लोकसभा सीटों के साथ टीएमसी विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन का एक प्रमुख हिस्सा है।

अभिषेक बनर्जी 2014 से पश्चिम बंगाल के डायमंड हार्बर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से संसद सदस्य हैं। वह 2011 से अखिल भारतीय तृणमूल युवा कांग्रेस के अध्यक्ष रहे हैं। उन्हें टीएमसी में ममता बनर्जी के बाद सबसे पावरफुल नेताओं में से एक माना जाता है।

अभिषेक बनर्जी का जन्म 7 नवंबर 1987 को हुआ था। उन्होंने कोलकाता के नव नालंदा हाई स्कूल और एम.पी. बिड़ला फाउंडेशन हायर सेकेंडरी स्कूल से पढ़ाई की। उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ प्लानिंग एंड मैनेजमेंट से बीबीए और एमबीए की डिग्री ली है। उनकी शादी एक थाई नागरिक रुजिरा बनर्जी से हुई है।

मेदिनीपुर पहुंचे राष्ट्रीय फुटबॉल टीम के पूर्व स्टार फुटबॉलर मेहताब हुसैन

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (खड़गपुर): ऐतिहासिक मेदिनीपुर शहर में भारत की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम के पूर्व स्टार फुटबॉलर मेहताब हुसैन पहुंचे। मेहताब हुसैन को "मिडफील्ड जनरल" के नाम से जाना जाता है और वह पूर्वी बंगाल के 'घर के लड़के' माने जाते हैं। उन्होंने 2007 से 2017 तक लगातार दस साल तक लाल-पीली जर्सी में खेला है।

मेहताब हुसैन ने अपने करियर में मोहनबागान क्लब, टालीगंज अग्रगामी, ओएनजीसी, इंडियन सुपर लीग में केरल ब्लास्टर्स और जमशेदपुर एफसी के लिए भी खेला है। वह वर्तमान में कोलकाता फुटबॉल लीग में रेलवे एफसी के कोच हैं और उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा कि वह मेदिनीपुर के प्रतिभाशाली फुटबॉलरों को तलाशने के लिए एक विशेष शिविर आयोजित करने की योजना बना रहे हैं।

वह वर्तमान में कोलकाता लीग में रेलवे एफसी के कोच के रूप में कार्यरत हैं और टीम के प्रदर्शन में सुधार के लिए काम कर रहे हैं। मेहताब हुसैन ने कहा, "कोचिंग करना मुझे बहुत पसंद है और मैं फुटबॉल से दूर नहीं रह सकता।" इसके अलावा, उनकी बायोपिक 'मेहताब' अगले साल रिलीज होने की संभावना है, जिसका निर्देशन बप्पा कर रहे हैं।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्र. 1 भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर की राजभाषायी निरीक्षण में सराहनीय प्रस्तुति

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (खड़गपुर): डॉ. विचित्र सेनगुप्त, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), पूर्व क्षेत्र, कोलकाता एवं डॉ. राजीव रावत, सदस्य सचिव, नराकास खड़गपुर ने पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर का राजभाषा निरीक्षण किया।

निरीक्षण दल का स्वागत विद्यालय के एनसीसी कैडेट्स द्वारा गरिमामय ढंग से किया गया। प्राचार्य एवं प्रधानाध्यापक ने ग्रीन पॉट भेंटकर तथा उत्तरीय पहनाकर स्वागत-सत्कार किया। निरीक्षण के दौरान राजभाषा से संबंधित कार्यालयीन कार्यों की गहन समीक्षा की गई, जिसमें उपस्थिति पंजिका, आवक-जावक रजिस्टर, कार्य साधक एवं प्रवीणता सूची, सेवा पुस्तिका प्रविष्टियाँ, रबर मोहरे, हिंदी पुस्तकों की खरीद पर व्यय विवरण, विज्ञापन, तथा विद्यालय की अन्य उपलब्धियाँ सम्मिलित रहीं।

मनीष शर्मा ने प्रभावशाली पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से विद्यालय की राजभाषा उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. मनीषा शर्मा, नीलिमा कुमारी, सुरेश चंद्र दास, सत्यानन्द माझी (प्रधानाध्यापक) सहित अनेक शिक्षकगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे एवं निरीक्षण प्रक्रिया में सहयोग प्रदान किया।

डॉ. सेनगुप्त ने विद्यालय द्वारा किए जा रहे राजभाषा कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा इसे निरंतर गति देने की प्रेरणा दी। उन्होंने प्राचार्य को विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया, जिनके सशक्त नेतृत्व में विद्यालय में राजभाषा का प्रभावी एवं अनुकरणीय क्रियान्वयन हो रहा है।

कार्यक्रम का सफल संचालन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के समन्वयक मुकीन खान द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन सुरेश चंद्र दास ने करते हुए सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोगकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

गौरतलब है कि यह विद्यालय "हिंदी संवाद-प्रयोग" के प्रभावशाली प्रयासों के चलते राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित युवा संसद कार्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त कर राजभाषा के यश को राष्ट्रीय पटल पर स्थापित कर चुका है। इस प्रकार के निरीक्षण कार्यक्रम देश में राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट प्रयोग एवं संवर्धन को बल प्रदान करते हैं।

ईसीएल सीएमडी सतीश झा ने किया सोदपुर क्षेत्र का व्यापक दौरा दिया आवश्यक दिशा निर्देश

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (पांडवेश्वर): ईसीएल के सीएमडी सतीश झा ने सोदपुर क्षेत्र का व्यापक दौरा किया,

इस यात्रा कार्यक्रम में चिनाकुरी खदान-1, चिनाकुरी खदान-3, दुबेश्वरी कोलियरी और चिनाकुरी साइडिंग जैसे प्रमुख खनन स्थलों का निरीक्षण, राजस्व-साझाकरण के आधार पर आवंटित खदान विकासकर्ता एवं संचालक (एमडीओ) खदानों की समीक्षा शामिल थी,

सीएमडी के साथ उनके तकनीकी सचिव महाप्रबंधक समन्वय एसके सहाना, क्षेत्र के महाप्रबंधक अभिजित गंगोपाध्याय, क्षेत्र के एजीएम समेत अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे,

सीएमडी ने कोलियरी और साइडिंग का निरीक्षण करने के बाद क्षेत्रीय सभागार में समीक्षा बैठक किया, जिसमें सभी अधिकारियों के साथ सोदपुर क्षेत्र के प्रदर्शन का आकलन किया गया, सीएमडी ने सोदपुर क्षेत्र में दीर्घकालिक उत्पादन रणनीतियों की खोज और उत्पादन क्षमता बढ़ाने पर ज़ोर दिया, समीक्षा बैठक में उत्पादन और प्रेषण शुरू करने की समय-सीमा सहित एमडीओ परिचालन की प्रगति पर विशेष ध्यान दिया गया, रेल प्रेषण अवसंरचना को सुदृढ़ करने और रसद को अनुकूलित करने पर विस्तृत चर्चा हुई।

सीएमडी ने अधिकारियों को क्षेत्र से समग्र प्रेषण दक्षता में उल्लेखनीय सुधार लाने के लिए कार्य करने का निर्देश भी दिया,

कोल इंडिया के निदेशक मानव संसाधन विनय रंजन ने डूरंड कप टूर्नामेंट में उपस्थित हुए

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (शिलांग): कोल इंडिया द्वारा आयोजित होने वाले डूरंड कप के मैच में शिलांग के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में कोल इंडिया के निदेशक मानव संसाधन विनय रंजन ने उपस्थित होकर नार्थ ईस्टर्न यूनाइटेड एफसी और मलेशियाई सशस्त्र बलों के बीच हो रहे मैच में खिलाड़ियों को उत्साह वर्धन किया, कोल इंडिया इस विशाल खेल आयोजन का संचालन कर रहा है, जो एशिया का सबसे पुराना और भारत के सबसे प्रतिष्ठित फुटबॉल टूर्नामेंटों में से एक है, निदेशक मानव संसाधन ने दोनों टीमों के खिलाड़ियों को शुभकामना दिया.

मेदिनीपुर के सुकुमार आचार्य को मिलेगा मुजफ्फर अहमद स्मृति पुरस्कार

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (खड़गपुर): इस वर्ष का मुजफ्फर अहमद स्मृति पुरस्कार-2025 पश्चिम मेदिनीपुर जिला अंतर्गत मेदिनीपुर शहर के वरिष्ठ लेखक सुकुमार आचार्य को मिलेगा। सुकुमार आचार्य को यह पुरस्कार उनकी लिखी पुस्तक "आजकल का धनतंत्र शोषण और संघर्ष" के लिए दिया जा रहा है। यह पुस्तक एनबीए से प्रकाशित हुई है और इसकी भूमिका पूर्व मंत्री डॉ. सूर्यकांत मिश्रा ने लिखी है। आगामी 5 अगस्त को मंगलवार को महाजाति सदन में स्वतंत्रता सेनानी मुजफ्फर अहमद के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित समारोह में यह पुरस्कार लेखक को सौंपा जाएगा। इस घोषणा से जंगल महल के प्रबुद्ध वर्ग में हर्ष व्याप्त है।

गगनाबाद गाँव अब फूलों की खेती जैसी वैकल्पिक खेती से कमाई के संकेत

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (पुरुलिया): काशीपुर स्थित गगनाबाद गाँव जहां के 80 प्रतिशत से ज़्यादा लोग लगभग पूरे दिन फूलों की खेती में लगे रहते हैं। कहा जाए कि फूलों की खेती ही गाँव वालों की मुख्य आजीविका है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

पुरुलिया के काशीपुर स्थित गगनाबाद गाँव अब फूलों की खेती जैसी वैकल्पिक खेती से कमाई के संकेत दे रहा है। पूरा गाँव फूलों की खेती पर निर्भर है। गाँव के किसान न केवल जिले के विभिन्न हिस्सों में, बल्कि दूसरे जिलों में भी फूलों के पौधे बेचकर मुनाफा कमा रहे हैं।

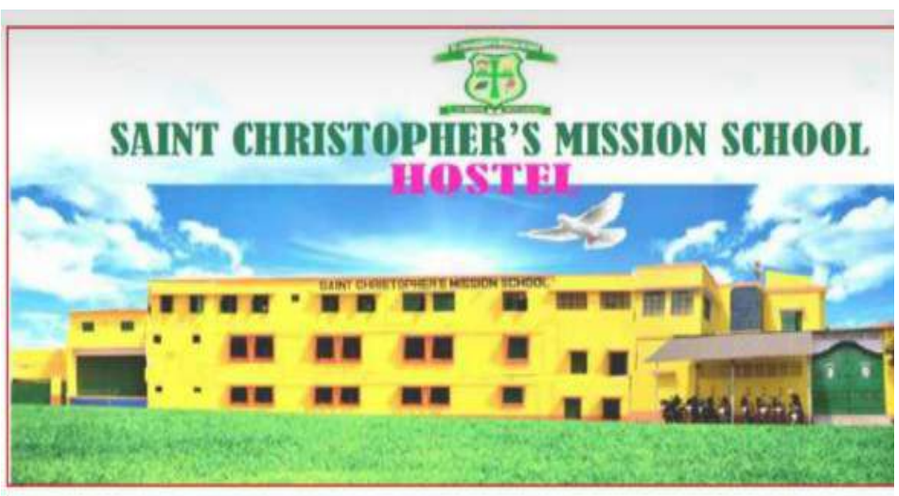

जानकारी के अनुसार सुदूर काशीपुर जिले का यह साधारण सा गाँव फूल प्रेमियों के बीच खासा प्रसिद्ध है। अगर आप गगनाबाद जाएँ, तो आपको गाँव के दोनों ओर फूलों के बागान दिखाई देंगे। इसके अलावा, यहाँ तरह-तरह के फलों और सब्जियों के पौधे भी हैं।

एक ज़माने में गाँव में लगभग सभी लोग खेती-बाड़ी करके गुज़ारा करते थे। आजकल गाँव के प्रायः लोग सब्ज़ियों की बजाय रंग-बिरंगे फूलों की खेती में व्यस्त हैं। कभी प्राकृतिक आपदाओं के कारण सब्ज़ियों की पैदावार कम होती है, तो कभी अच्छी फसल होने पर भी किसानों को उसका सही दाम न मिलने से नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए, वर्तमान में गाँव के लगभग 80 प्रतिशत लोग फूलों की खेती पर निर्भर हैं। गगनाबाद गाँव के फूल उत्पादक किसान इस खेती से लाभ कमा रहे हैं।

ठेका श्रमिकों के बकाया बोनस का भुगतान 15 दिनों के भीतर होने की संभावना

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (डिसरगढ़): ईसीएल मुख्यालय सांकतोड़िया में कार्यरत सौ से अधिक ठेका श्रमिकों के बकाया बोनस का भुगतान 15 दिनों के भीतर कर दिया जाएगा। इस आशय की जानकारी भाजपा के आसनसोल जिला संगठन उपाध्यक्ष अभिजीत आचार्य ने दी है।

जानकारी के अनुसार वे पश्चिम बर्दवान जिले के कुल्टी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत ईसीएल मुख्यालय सांकतोड़िया में कार्यरत सौ से अधिक ठेका श्रमिकों के बकाया बोनस के लिए छह महीने से आंदोलन कर रहे थे। भाजपा नेता अभिजीत आचार्य ने बताया कि आज आखिरकार ईसीएल अधिकारियों ने उनकी मांग मान ली है। अभिजीत आचार्य ने सोमवार की दोपहर ईसीएल महाप्रबंधक (पी एंड आई आर) पुण्यदीप भट्टाचार्य के साथ ठेका श्रमिकों की समस्याओं को लेकर बैठक की। भाजपा नेता श्री आचार्य ने बताया कि इसके बाद ईसीएल अधिकारियों ने उनकी मांग मान ली है और 15 दिनों के भीतर बकाया भुगतान का आश्वासन दिया है।

इस आशय में पुण्यदीप भट्टाचार्य ने कहा कि बातचीत हुई है। बोनस के बारे मे हमलोग सोंच रहे हैं। उन्होंने 15 दिनों के अंदर हल करने की मांग की है।

हमलोगों ने कहा है कि मामले को देख रहे हैं।

श्रमिकों को पूजा से एक महीने पहले बोनस मिलेगा, इस खुशखबरी से ठेका श्रमिकों में काफी हर्ष और उत्साह है।

दिशम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर आसनसोल चैंबर ने शोक व्यक्त किया

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (आसनसोल): आसनसोल चैंबर ऑफ कॉमर्स की ओर से, नरेश कुमार अग्रवाल (सलाहकार) ने कहा, हम पूर्व केंद्रीय कोयला मंत्री और एक सम्मानित राजनेता शिबू सोरेन के निधन पर अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं।

दिवंगत श्री सोरेन के नेतृत्व और हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान और कोयला क्षेत्र के विकास के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता ने हमारे राष्ट्र पर एक अमिट छाप छोड़ी है। 2006 में आसनसोल चैंबर ऑफ कॉमर्स में उनका आगमन हमारे लिए अत्यंत गौरव का क्षण था और हम इसे गहरे सम्मान और कृतज्ञता के साथ याद करते हैं।

सेवा, दृढ़ता और समर्पण की उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। हम उनके परिवार, सहयोगियों और उनके निधन पर शोक व्यक्त करने वाले सभी लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

सावन के अंतिम सोमवार पर अदिकार्ना फाउंडेशन ने बांटे 11 किलो लड्डू, शिव भक्तों में हर्ष

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (नियामतपुर): सीतारामपुर में सावन के पवित्र महीने के अंतिम सोमवार के पावन अवसर पर, सीतारामपुर की सामाजिक संस्था 'अदिकार्ना फाउंडेशन' ने नियामतपुर के शिव मंदिर में एक विशेष आयोजन किया। इस शुभ अवसर पर फाउंडेशन की ओर से भगवान शिव के भक्तों को 11 किलो स्वादिष्ट लड्डुओं का वितरण किया गया, जिससे मंदिर प्रांगण में उत्सव का माहौल बन गया। शिव मंदिर के पुजारी पंडित जी ने शिव लिंग में अदिकार्ना फाउंडेशन के सदस्यों के साथ पूजा अर्चना कर लड्डू वितरण किया गया।

इस पुण्य कार्य में फाउंडेशन को विशेष सहयोग और समर्थन चार्टर्ड अकाउंटेंट विक्रम जालान से मिला। देर रात श्री जालान के अचानक सुझाव पर इस कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई, और उनकी प्रेरणा से ही सुबह-सुबह यह सफल आयोजन संभव हो पाया।

इस कार्यक्रम के दौरान अधिकरण फाउंडेशन के कानूनी सलाहकार और आसनसोल सीबीआई कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता विनोद सिंह सोलंकी जी, विशिष्ट गायक और फाउंडेशन के सदस्य गोपाल पारिक, सुभाष पिलानीवाला, अजय ठाकुर, राजा तथा मंदिर के पंडित जी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अदिकार्ना फाउंडेशन के अध्यक्ष संतोष कुमार वर्मा ने इस अवसर पर कहा, "सावन के अंतिम सोमवार पर 'बोल बम' का जयकारा लगाते हुए मंदिर आने वाले सभी भाई-बहनों और भक्तों को लड्डू देकर पुण्य कमाने का यह सौभाग्य हमें मिला है। इस पुण्य कार्य का पूरा श्रेय हमारे चार्टर्ड अकाउंटेंट विक्रम जालान जी को जाता है, जिन्होंने देर रात इसकी व्यवस्था करने का सुझाव दिया।

हम सभी ने मिलकर एक टीम के रूप में काम किया और इस कार्यक्रम को सफल बनाया, जिसमें छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।"

फाउंडेशन के सदस्यों ने बताया कि श्री चंद्रचूड़ बाबा मंदिर से पूजा-अर्चना के बाद मंदिर से लौट रहे सभी भक्तों को मान-सम्मान के साथ ये लड्डू भेंट किए गए। शिव मंदिर में माता बहनो को भी लड्डू दिए गए।अदिकार्ना फाउंडेशन के इस कार्य की भक्तों और स्थानीय समुदाय ने भरपूर सराहना की है।

मेमारी थाना पुलिस में 40 मोबाइल बरामद कर मालिकों को वापस लौटाए

अमन राय

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (बर्दवान): पूर्व बर्दवान जिले की पुलिस ने एक बार फिर से 40 खोए हुए मोबाइल फोन को बरामद कर उनके मालिकों को वापस लौटाए हैं। मेमारी थाना द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के तहत यह फ़ोन लौटाये गए|

मोबाइल फोन क्षेत्र के विभिन्न इलाकों से खो गए थे। जिला पुलिस के डीएसपी मेमारी और ओसी मेमारी ने डीएसपी मेमारी कार्यालय में आयोजित "फिरे पावा" कार्यक्रम में इन मोबाइल फोनों को उनके असली मालिकों को सौंपा। पुलिस की इस पहल की सराहना करते हुए लोग पुलिस की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा कर रहे हैं। पुलिस की इस कोशिश से लोगों का पुलिस पर विश्वास और भी बढ़ गया है।

इस अवसर पर डीएसपी मेमारी ने कहा कि पुलिस लगातार लोगों की सेवा के लिए काम कर रही है और आगे भी इस तरह के प्रयास जारी रहेंगे।

नियामतपुर जूनियर चैबर इंटरनेशनल शक्ति शाखा की ओर से कांवडियो का सेवा कार्यक्रम

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (डिसरगढ़): कुल्टी विधानसभा के बराकर से डिसरगढ़ जानेवाले मुख्य मार्ग जल बागान इंडिया पावर कार्यालय का समीप 15 वर्षों से नियामतपुर जूनियर चैबर इंटरनेशनल शक्ति शाखा की ओर से का सेवा कार्यक्रम का आयोजन सावन माह के प्रत्येक रविवार की देर संध्या किया जाता रहा हैं।

कार्यक्रम में उपस्थित पिंटू गोयल ने बताया कि नियामतपुर के शक्ति शाखा द्वारा रविवार की रात्रि प्रत्येके सावन माह में विगत 15 वर्षों से यह कार्यक्रम करते आ रहा खासकर नियामतपुर के युवाओं द्वारा किया जाता रहा है।

सावन माह के सोमवार को शिव भक्तों द्वारा बाबा का जला अभिषेक किया जाता हैं। जिसमे हर उम्र के महिलाए पुरुष बच्चे रविवार की देर संध्या अपने-अपने घरों से निकलते है और दामोदर नदी से जल भरकर बाबा शिव का जलाभिषेक करते हैं। आसनसोल के क क्षेत्र में दो शिवालय जागृत शिवालय में जाना जाता है एक बराकर स्थित सिद्धेश्वर शिवा स्थान दूसरा चंद्रचूड़ शिव मंदिर खासकर जो डिसरगढ़ घाट से जल भरकर सिद्धेश्वर शिवा स्थान ओर चीन कुरि कोड रामघाट से जल भर कर चंद्रचूड़ मंदिर में बाबा का जला अभिषेक करते हैं। युवाओं द्वारा रविवार की रात्रि सावन माह में नियामतपुर ओर झालबगान में कांवड़ियों सेवा में शिविर लगाया जाता जल भरने के लिए जाने वाले कड़ियों को भोजन शरबत मीठा का सेवन प्रदान निःशुल्क लगाया जाता आ रहा है।

यूवा सदस्य अभिषेक अग्रवाल ने कहा कि सेवा की जिम्मेवारी हमेशा से युवाओं के कंधे पर रही हमारा ग्रुप विगत कई सालों से सेवा देने का हर प्रयास करते आ रहे हैं। सेवा प्रदान करने से मां को बड़ा शांति मिलती है। साथी उन्होंने कहा कि हमारे संस्थान ओर भी कई कार्य किया जाता रहा हैं। वही कांवड़ियों की पैदल यत्रा में कांवड़ियों की कई झांकी देखने को मली इसमें कोई हनुमान जी तो कोई शिव पार्वती का रूप ले रहा था तो कई भक्त कावर ले कर झूमते गाते शिव की जयकारा बोल बम के नारे में रामे दिखे।

मौके पर मार्गदर्शक सदस्य मार्ग दर्शक हरि डोकानियां, ललित डोकानियां, संदीप, डोकानियां, नियामतपुर शक्ति शाखा के श्याम शर्मा, प्रदीप डोकानियां, अमित बालोदिया, मनीष अग्रवाल, शक्ति बोहरा, अभिषेक अग्रवाल, दिव्यांश डोकानियां, तनुज अग्रवाल, मेहुल डोकानियां, अनिकेत यादव, रोमित सिंह, सोयम टिबरेवाल, सुजल डोकानियां इत्यादि उपस्थित रहे।

रानीगंज के मुख्य डाक विभाग कार्यालय के डाकघर बाबू का स्वागत

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (रानीगंज): सुरक्षा संस्था की तरफ से रानीगंज के मुख्य डाकघर के नए प्रभारी दीपक भगत का स्वागत किया गया। सुरक्षा के अध्यक्ष सरदार दलजीत सिंह वाधवा ने उन्हें उत्तरी पहनाकर स्वागत किया एवं कहा कि हमें उम्मीद है कि आप अपने नए पद पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगे और डाकघर के कार्यों को सफलतापूर्वक संचालित करेंगे। इस अवसर पर डाक विभाग अधिकारी सूरज सील एवं दीप्तिकाना महतो के साथ कई सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। डाकघर प्रभारी दीपक भगत ने कहां की वे ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करेंगे। अपने सहकर्मियों के साथ सहयोग करेंगे और एक सकारात्मक कार्य वातावरण बनाएंगे।

आसनसोल मंडल में व्यापक स्वच्छता जागरूकता अभियान चलाया गया

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (आसनसोल): पूर्व रेलवे के आसनसोल मंडल ने रेलवे कर्मचारियों, यात्रियों और स्थानीय लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए 01.08.2025 से स्वच्छता-विषयक गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित की।

रेलवे कर्मचारियों उनके परिवारों और यात्रियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी के साथ पूरे मंडल में स्वच्छता शपथ समारोह आयोजित किए गए। पानागढ़, अंडाल, आसनसोल, सीतारामपुर, बराकर, चित्तरंजन, जामताड़ा और मधुपुर सहित प्रमुख स्टेशनों के साथ-साथ मंडल रेलवे अस्पताल और आसनसोल के मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक कार्यालय में भी शपथ दिलाई गई।

"स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत" का नारा कॉलोनियों और स्टेशन क्षेत्रों में गूंज रहा था, जिससे सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता के महत्त्व पर ज़ोर दिया गया। इन अभियानों ने कर्मचारियों और जनता दोनों को स्वच्छ परिवेश बनाए रखने में उनकी भूमिका के प्रति जागरूक किया।

स्वच्छता अभियान 2025 के तहत लोको कॉलोनी आसनसोल और अन्य रेलवे आवासीय एवं परिचालन क्षेत्रों में गहन सफाई अभियान चलाए गए। सभी कॉलोनियों में घर-घर कचरा संग्रहण सुनिश्चित किया गया और आसनसोल रेलवे कॉलोनी में वेक्टर जनित रोग नियंत्रण उपाय शुरू किए गए।

रेलवे अधिकारियों ने बेहतर स्वच्छता प्रक्रियाओं और सेवा मानकों को बढ़ावा देने के लिए अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों, विशेष रूप से यात्रियों से सीधे संपर्क करने वाले कर्मचारियों के लिए कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित किए।

जनता की भागीदारी के एक रचनात्मक दृष्टिकोण के तहत प्रमुख स्टेशनों और सार्वजनिक संपर्क बिंदुओं पर स्वच्छता पर आधारित सेल्फी बूथ स्थापित किए गए, जिससे यात्रियों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली।

पूरे मंडल में जागरूकता गतिविधियों में व्यापक भागीदारी देखी गई, जिससे सार्वजनिक स्वच्छता के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी को सुदृढ़ करने में मदद मिली। इस अभियान ने यात्रियों, कर्मचारियों और स्थानीय निवासियों को एक स्वच्छ, हरित रेलवे वातावरण में योगदान देने के लिए प्रभावी रूप से प्रोत्साहित किया।

हिंद की चादर श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को समर्पित यात्रा शिल्पांचल पहुंचेगी

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (रानीगंज): श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की 350 साल शहीदी समागम को समर्पित एक यात्रा निकलेगी जो 31 अगस्त को गुरु का बाग गुरुद्वारा पटना साहिब से आरंभ होगी।

यात्रा में सिख संगत द्वारा डेढ़ सौ शहरों के अंदर यात्रा जाएगी और उसकी यात्रा का आरंभ जो है वह नीतीश कुमार जी करेंगे. तख्त श्री हरमंदिर साहिब पटना के प्रबंधक कमेटी के प्रमुख सरदार हरपाल सिंह जोहल ने बताया कि सभी राज्यों में यात्रा जाएगी गुरु तेग बहादुर साहिब जी की कुर्बानी भारत के लिए है आदित्य है। भारत की संस्कृति के लिए है इसलिए हर भारतवासी इसका आगे स्वागत करें और इसमें हिस्सा ले।

पत्रकार सम्मेलन में मुख्य रूप से सिख समाज के प्रमुख पदाधिकारी सरदार दर्शन सिंह, सरदार परमजीत सिंह, सुरजीत सिंह, सुखविंदर सिंह बिट्टू, सतपाल सिंह, जसवंत सिंह सहित समाज के कई वरिष्ठ पदाधिकारी थे।

ऑपरेशन जीवन रक्षा के तहत त्वरित कार्रवाई से जसीडीह में हादसा टला

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (आसनसोल): पूर्व रेलवे के आसनसोल मंडल ने ऑपरेशन "जीवन रक्षा" के तहत 02 अगस्त 2025 को जसीडीह रेलवे स्टेशन पर एक बड़ी दुर्घटना को सफलतापूर्वक टाल दिया। यह घटना श्रावणी मेले की भारी भीड़ के दौरान हुई जब काफी संख्या में तीर्थयात्रीगण जसीडीह स्टेशन से गुज़र रहे थे।

लगभग 17:10 बजे जब एक ट्रेन प्लेटफ़ॉर्म संख्या 2 से गुज़र रही थी, तो एक महिला यात्री गलती से फिसलकर चलती ट्रेन और प्लेटफ़ॉर्म के बीच की खाली जगह में गिर गई। स्थिति कुछ ही क्षणों में जानलेवा हो सकती थी।

प्लेटफ़ॉर्म के कालका छोर पर श्रावणी मेला ड्यूटी के लिए तैनात सतर्क आरपीएफ कर्मियों ने बिना किसी हिचकिचाहट के कार्रवाई की। तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए कर्मचारी मौके पर पहुँचे और यात्री को खतरे वाले क्षेत्र से सफलतापूर्वक बाहर निकाल लिया।

समय पर किए गए कार्रवाई करने की वजह से यात्री की सुरक्षा सुनिश्चित हुई और एक गंभीर घटना टल गई। सतर्कता और त्वरित कार्रवाई के इस कार्य ने काफी संख्या में यात्रियों के आवाजाही अवधि के दौरान आरपीएफ की दक्षता और तत्परता को प्रदर्शित किया।

मंडल रेल प्रशासन ने इस घटना को ऑपरेशन "जीवन रक्षा" के तहत एक उल्लेखनीय उदाहरण के रूप में स्वीकार किया जिसका उद्देश्य सक्रिय गश्त और त्वरित प्रतिक्रिया तंत्र के माध्यम से यात्री सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

सावन माह की अंतिम सोमवारी के दिन उमड़ी भक्तों की भीड़

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (पांडवेश्वर): सावन माह की अंतिम सोमवारी के दिन शिवालयों में भक्त श्रद्धालुओं की भीड़ जलार्पण करने के लिए लगी रही, वही रविवार रात्रि में अजय नदी से जल कांवर पर लेने के लिए आने वाले भक्तों के लिए पांडवेश्वर के स्वयंसेवी संस्थाओं की ओर से जलपान और प्रसाद की भी व्यवस्था की गई थी, पांडेश्वर स्टेशन रोड से अजय नदी पांडव स्थान जाने वाले कांवरियों को पानी और मिठाई का वितरण करने के साथ पांडव मंदिर परिसर में खीर पूड़ी की भी इंतजाम किया गया था, सावन माह की अंतिम सोमवारी के दिन भक्तों ने मंदिरों घरों में रुद्राभिषेक कराने के साथ भक्तिभाव से पूजा अर्चना किया, जबकि बंगला सावन का अंतिम सोमवारी 11 अगस्त को होगा.

आज का राशिफल

मेष

दिन अच्छा रहेगा। अच्छी सूचना प्राप्त हो सकती है। मन प्रसन्न होगा। नौकरी में तरक्की का योग है। व्यापार में सोच समझ कर धन खर्च करना होगा, नहीं तो धन हानि हो सकती है। छात्रों के लिए दिन ठीक है। स्वास्थ का ध्यान रखें।

वृषभ

दिन व्यस्त रहेगा। नौकरी क्षेत्र में अत्यधिक कार्यभार के चलते मानसिक तनाव महसूस करेगे। माता पिता के साथ समय व्यतीत करें। व्यापार में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। अनावश्यक खर्चे हो सकते हैं। बजट बनाकर चलना होगा।

मिथुन

दिन मिलाजुला रहेगा। व्यापार में सावधान रहने की आवश्यकता है। जीवनसाथी के साथ वाद-विवाद हो सकता है। क्रोद्ध और वाणी पर संयम रखना होगा। किसी धार्मिक कार्यक्रम में सम्मलित हो सकते हैं। स्वास्थ्य का ख्याल रखे।

कर्क

दिन सामान्य रहेगा। संयत रहने की आवश्यकता है। व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद से बचना होगा। धन प्राप्ति के योग हैं। मन परेशान हो सकता है। यात्रा पर जा सकते हैं। खर्च बढ़ सकते हैं। परिवार में वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

दिन बढ़िया रहेगा। मन शान्त रहेगा। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में निराशा एवं असन्तोष के भाव रहेंगे। विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या

दिन अच्छा रहेगा। आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगे। संयत रहने की आवश्यकता है। अपनी भावनाओं को वश में रखें। परिवार में शान्ति का माहौल बना रहेगा। मित्र के सहयोग से कारोबार में परिवर्तन की संभावना हैं। व्यापार अच्छा चलेगा।

तुला

दिन सामान्य रहेगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। अपनी सोच और व्यवहार को संतुलित रखना होगा। किसी पर ज्यादा भरोसा करने से बचें। बड़ा फैसला सोच-विचार कर लेना बेहतर रहेगा। परिवारिक माहौल खुशनुमा रहेगा।

वृश्चिक

दिन अच्छा रहेगा। शारीरिक रूप से स्वास्थ्य रहेगे। बिना सोचे-समझे अपना पैसा बर्बाद ना करे। व्यापार में कोई बड़ी डील कन्फर्म हो सकती है। भागदौड़ और कठिन परिश्रम से कार्यों में सफलता मिलेगा। क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें।

धनु

दिन मिला-जुला रहेगा। व्यापार में व्यवधान आ सकती हैं। प्रयासों से कार्यों में सफलता मिलेगी और धनलाभ की स्थिति रहेगी। परिजनों के साथ तकरार होने की संभावना है। आर्थिक लाभ के योग बन रहे है। स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें।

मकर

दिन सामान्य रहेगा। कार्यक्षेत्र में प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ सकता है। समाज में सम्मान बढ़ेगा। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा। परिवार का माहौल अच्छा रहेगा। आकस्मिक लाभ होगा।

कुंभ

दिन अच्छा रहेगा। कारोबार में धनलाभ और नौकरी में तरक्की के योग बन रहे हैं। कार्यों में सफलता से धनलाभ की स्थिति बनेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। सामाजिक क्षेत्र में प्रशंसापात्र बनेंगे। पारिवारिक जीवन में सुखमय रहेगा।

मीन

दिन शुभ रहेगा। व्यापार-धंधा अच्छा चलेगा। सभी कार्य निर्धारित रूप से योजना के अनुसार पूर्ण होंगे। परिवार का माहौल अच्छा रहेगा। मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। कोई शुभ समाचार मिल सकता है। नौकरी में वेतन वृद्धि के योग हैं।

भारत को शेर बनाने की संघ की कवायद ऑपरेशन सिंदूर से लेकर चुनावी रणभूमि तक

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: भारत को फिर से सोने की चिड़िया नहीं, बल्कि शेर बनाना है यह संदेश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने केरल की धरती से दिया है। जिस वक्त संसद में ऑपरेशन सिंदूर पर बहस चल रही थी, उसी वक्त कोच्चि में भागवत ने शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास की ज्ञान सभा में मंच से जो कहा, उसका मतलब सिर्फ शिक्षा तक सिमटा नहीं रह गया। असल में यह आने वाले विधानसभा चुनावों से लेकर पाकिस्तान को चेतावनी तक, हर जगह एक नई लय जोड़ता नजर आता है। संघ प्रमुख ने साफ कर दिया कि अब भारत को ताकतवर बनना होगा क्योंकि दुनिया सिर्फ शक्ति की भाषा समझती है। यह बात ऐसे दौर में कही गई है जब ऑपरेशन सिंदूर के जरिए देश ने फिर से दिखा दिया है कि आतंकवाद को जड़ से खत्म करने में अब कोई समझौता नहीं होगा। पहलगाम में हमलावरों को जिस तरह सुरक्षा बलों ने घेरकर मार गिराया, उससे सरकार का आत्मविश्वास संसद में भी झलका। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने तो यहां तक कह दिया कि देश के बड़े लक्ष्य पर ध्यान रखें, छोटे मुद्दों में उलझकर सैनिकों के सम्मान और सुरक्षा से खिलवाड़ नहीं किया जा सकता।

मोहन भागवत ने इस मौके पर मैकाले की शिक्षा नीति का जिक्र कर यह भी समझा दिया कि भारत को अपनी परंपरा और संस्कृति से कटकर कभी ताकतवर नहीं बना जा सकता। उनका कहना था कि हमें शिक्षा को सिर्फ रोजगार से नहीं जोड़ना चाहिए बल्कि यह समाज निर्माण और सेवा भाव को मजबूत करने वाली होनी चाहिए। संघ हमेशा से ही शिक्षा में भारतीय मूल्यों के समावेश पर जोर देता रहा है। लेकिन इस बार बात महज शिक्षा सुधार तक नहीं रुकी, भागवत ने साफ कर दिया कि भारत की पहचान भारत ही रहनी चाहिए। उन्होंने भारत बनाम इंडिया की बहस में दखल देते हुए कहा कि इंडिया दैट इज भारत ठीक है, लेकिन भारत का अनुवाद नहीं होना चाहिए। ये बात विपक्ष के उस इंडिया गठबंधन के लिए भी सीधा संदेश है जिसने नामकरण को लेकर सरकार पर सवाल उठाए थे। भागवत ने कहा कि जब हम लिखते-बोलते हैं तो भारत को भारत ही कहना चाहिए, यही असली सम्मान है।

साफ है कि ये बातें सिर्फ किताबों में छपने के लिए नहीं बोली गईं। ऑपरेशन सिंदूर के बाद जो देशभक्ति का माहौल बना है, उसे कायम रखना बीजेपी के लिए जरूरी है। आने वाले विधानसभा चुनावों में खासकर बिहार, पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु में बीजेपी को इसी राष्ट्रवादी हवा की जरूरत होगी। पहलगाम एनकाउंटर के बाद संसद में जब सरकार ने ऑपरेशन सिंदूर के अगले कदमों पर चर्चा कर विपक्ष के तीखे सवालों को दरकिनार किया, तो संदेश साफ था कि अब आतंकवाद को अंदर तक घुसकर खत्म किया जाएगा। अमित शाह ने संसद में कहा कि ये मनमोहन सिंह की सरकार नहीं है, ये नरेंद्र मोदी की सरकार है। यानी अब कोई नर्म नीति नहीं। ऐसे में मोहन भागवत का भारत को शेर बनाने वाला बयान वही माहौल और मजबूत करता है।

संघ को भी पता है कि राष्ट्रवाद का एजेंडा हर बार अपने आप नहीं चलता। कई बार महंगाई, बेरोजगारी और जातिगत समीकरण से बात बिगड़ जाती है। बिहार में जाति जनगणना की बात को लेकर संघ पहले से ही असहज है क्योंकि ये मुद्दा हिंदुत्व के नैरेटिव को कमजोर करता है। इसलिए भागवत ने एक और लाइन जोड़ दी कि कट्टर हिंदू होने का मतलब दूसरों से नफरत करना नहीं है। उन्होंने कहा कि हिंदू धर्म का सार तो सभी को गले लगाने में है। अक्सर लोग समझते हैं कि कट्टर हिंदू मतलब दूसरे धर्मों को गाली देना, लेकिन यह गलतफहमी है। संघ प्रमुख की इस समझाइश से साफ है कि वो बीजेपी को यह रास्ता दिखा रहे हैं कि हिंदुत्व के कड़वे चेहरे को थोड़ी नरमी से पेश किया जाए ताकि नए वोटर भी जुड़ सकें।

केरल में यह बात कहना भी अपने आप में बड़ा संदेश है क्योंकि दक्षिण भारत में बीजेपी को अब भी बाहरी पार्टी माना जाता है। लेकिन संघ पिछले कुछ वर्षों से दक्षिण में लगातार सक्रिय है। केरल में खासकर ईसाई और मुस्लिम वोट बैंक को साधना आसान नहीं है, लेकिन शिक्षा, संस्कृति और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे मुद्दे ऐसे हैं जिनके जरिए जमीन पर धीरे-धीरे पकड़ बनाई जा सकती है। यही वजह है कि कोच्चि से लेकर कोयंबटूर तक संघ के कई संगठनों ने शिक्षा सम्मेलन से लेकर स्वास्थ्य शिविर तक का सहारा लिया है ताकि जमीनी जुड़ाव बने।मोहन भागवत के ताजा बयानों से बीजेपी को यह भी मदद मिलेगी कि जब नेता चुनावी मंचों से 'हाउ इज द जोश?' पूछेंगे तो ऑपरेशन सिंदूर और शेर वाला नैरेटिव वोटरों के मन में ताजा रहेगा। पहलगाम का एनकाउंटर, संसद की गरमा-गरम बहस और संघ प्रमुख का शेर वाला संदेश ये तीनों मिलकर यह सुनिश्चित करेंगे कि चुनाव आते-आते विपक्ष के जातीय समीकरण या बेरोजगारी जैसे सवाल राष्ट्रवाद के शोर में दब जाएं।

बीजेपी का बूथ मैनेजमेंट तो खैर संघ के बिना चलता ही नहीं। लेकिन हर बार संघ सड़कों पर दिखकर नहीं बल्कि चुपचाप गांव-कस्बों में मतदाता सूची खंगालने, बूथ लेवल कैडर मजबूत करने और संदेश पहुंचाने में लगा रहता है। ऊपर से भागवत जैसे बयान उस कैडर को दिशा देते हैं। जमीन पर कार्यकर्ता जब लोगों को समझाता है कि भारत अब शेर बन गया है और अब कोई भी दुश्मन सीमा पार से हमला नहीं कर पाएगा तो वोटर को भरोसा होता है कि मजबूत सरकार जरूरी है।ऐसे में आने वाला साल बीजेपी के लिए बड़ा है। बिहार चुनाव की तैयारी, बंगाल में पकड़ मजबूत करना और तमिलनाडु में नई जमीन तलाशना इन तीनों के बीच ऑपरेशन सिंदूर की गूंज और मोहन भागवत की शेर वाली लाइन जैसे तुरुप के पत्ते हैं। यही कारण है कि संसद से लेकर पंचायत तक बीजेपी की स्क्रिप्ट तैयार है भारत अब बुद्ध का देश तो रहेगा, लेकिन कमजोर नहीं रहेगा। यही लाइन विपक्ष के जातीय गठजोड़ों पर भारी पड़ सकती है।

कुल मिलाकर मोहन भागवत का केरल दौरा, संसद में ऑपरेशन सिंदूर की चर्चा और पहलगाम में आतंकियों के खात्मे की खबर तीनों बातें एक ही कड़ी में बंध जाती हैं। भारत अब सोने की चिड़िया नहीं, शेर बनेगा और इस शेर की दहाड़ चुनावी मैदान तक पहुंचाई जाएगी। यही संघ की रणनीति है, यही बीजेपी का प्रचार मंत्र बनने वाला है। यही वजह है कि कोच्चि से उठी आवाज दिल्ली से लेकर दरभंगा तक गूंजेगी भारत अब किसी के दबाव में झुकने वाला नहीं है। यही बात जनता को याद दिलाई जाएगी और यही बात 2025-26 के चुनावी नतीजों में कितनी असर डालेगी, यह देखना दिलचस्प होगा।

संजय सक्सेना
लखनऊ

असंयमित व्यवहार और बदइंतजामी श्रद्धालुओं की जान पर भारी

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: हरिद्वार और बाराबंकी में 48 घंटे में दो मंदिर भगदड़ में 10 लोगों की मौत ने सुरक्षा इंतजामों पर सवाल खड़े कर दिए हैं. भीड़ नियंत्रण, अफवाह रोकथाम और आधी अधूरी तैयारी और आने वाले श्रद्धालुओं की तादाद की अनुमानित गणना में भारी गड़बड़ी श्रद्धालुओं का निरंकुश और असंयमित व्यवहार इन घटनाओं की वजह बन रहा हैं।

हरिद्वार के प्रसिद्ध मनसा देवी मंदिर में रविवार सुबह भगदड़ मच गई, जिसमें आठ लोगों की मौत हुई है. जानकारी के मुताबिक कांवड़ यात्रा के बाद रास्ता खुलने से भारी तादाद में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचे थे और भीड़ की वजह से अफरा-तफरी मच गई. हादसे में 15 लोगों घायल भी हुए हैं. प्रशासन ने बताया कि घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है.

मनसा देवी में मंदिर की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर यह भगदड़ हुई है और प्रशासन का कहना है कि स्थिति पर जल्द काबू पा लिया गया वरना मरने वालों की संख्या और अधिक बढ़ सकती थी. चश्मदीद के मुताबिक सीढ़ियों पर लगे बिजली के एक पिलर में शॉर्ट सर्किट की अफवाह उड़ी थी, जिसके बाद लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे.

सिर्फ एक दिन बाद ही इसी पैटर्न पर समान घटना उत्तर प्रदेश के बाराबंकी में सोमवार को एक मंदिर में मची भगदड़ में दो लोगों की मौत हो गई और 32 अन्य घायल हो गए. बंदरों द्वारा तोड़ा गया एक बिजली का तार टिन शेड पर गिर गया. यह घटना देश भर में धार्मिक स्थलों और सार्वजनिक आयोजनों में हुई जानलेवा भगदड़ की श्रृंखला में नई है. इस साल अब तक मंदिरों, रेलवे स्टेशनों और महाकुंभ जैसे विशाल आयोजनों में ऐसी त्रासदियों में 80 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है।

एक रिपोर्ट के अनुसार देश में साल 2003 से लेकर अब तक 23 भगदड़ में 1446 लोगों की जानें गई हैं, जबकि हजारों लोग घायल हुए. हाल के दिनों में धार्मिक स्थलों पर हुए भगदड़ की घटनाओं में कई लोगों के जान गंवानी पड़ी है.

29 जून, 2025: पुरी में रथ यात्रा के दौरान देवताओं के रथों के पास भगदड़ मचने से दो महिलाओं सहित तीन श्रद्धालुओं की मौत हो गई और कम से कम 50 घायल हो गए.03 मई, 2025: शनिवार को उत्तरी गोवा में एक मंदिर उत्सव के दौरान भगदड़ मचने से कम से कम छह लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए.08 जनवरी, 2025: तिरुपति में भगदड़ में 6 लोगों की मौत हो गई और 20 से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल हो गए, क्योंकि लोग तिरुमाला मंदिर में वैकुंठ एकादशी उत्सव के लिए टिकट लेने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे थे.

12 अगस्त, 2024: बिहार के जहानाबाद जिले के मखदुमपुर क्षेत्र में बाबा सिद्धनाथ मंदिर में भगदड़ मचने से कम से कम सात लोगों की मौत हो गई और नौ घायल हो गए.

02 जुलाई, 2024: उत्तर प्रदेश के हाथरस में एक 'सत्संग' के दौरान हुई भगदड़ में 121 लोगों की जान चली गई. यह भगदड़ बाबा नारायण हरि उर्फ साकार विश्व हरि 'भोले बाबा' के समागम में हुई थी, जो एक पूर्व पुलिसकर्मी थे और दो दशक पहले धार्मिक उपदेशक बन गए थे और खासकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उनके अनुयायी बढ़ गए थे.

31 मार्च, 2023: इंदौर शहर के एक मंदिर में रामनवमी के अवसर पर आयोजित 'हवन' कार्यक्रम के दौरान एक प्राचीन 'बावड़ी' या कुएं के ऊपर बनी स्लैब गिरने से कम से कम 36 लोगों की मौत हो गई.

01 जनवरी, 2022: जम्मू-कश्मीर में प्रसिद्ध माता वैष्णो देवी मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के कारण मची भगदड़ में कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई और एक दर्जन से ज्यादा घायल हो गए.14 जुलाई, 2015: आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में 'पुष्करम' उत्सव के उद्घाटन के दिन गोदावरी नदी के तट पर एक प्रमुख स्नान स्थल पर भगदड़ मचने से 27 तीर्थयात्रियों की मौत हो गई और 20 अन्य घायल हो गए.

03 अक्टूबर, 2014: दशहरा समारोह समाप्त होने के तुरंत बाद पटना के गांधी मैदान में भगदड़ मचने से 32 लोग मारे गए और 26 अन्य घायल हो गए.

13 अक्टूबर, 2013: मध्य प्रदेश के दतिया ज़िले में रतनगढ़ मंदिर के पास नवरात्रि उत्सव के दौरान मची भगदड़ में 115 लोग मारे गए और 100 से ज़्यादा घायल हो गए. भगदड़ इस अफ़वाह के कारण मची कि जिस नदी के पुल को श्रद्धालु पार कर रहे थे, वह टूटने वाला है.

19 नवंबर, 2012: पटना में गंगा नदी के किनारे अदालत घाट पर छठ पूजा के दौरान एक अस्थायी पुल के ढह जाने से मची भगदड़ में करीब 20 लोग मारे गए और कई अन्य घायल हो गए.14 जनवरी, 2011: केरल के सबरीमाला मंदिर में भगदड़ में 106 तीर्थयात्री मारे गए, 100 से ज्यादा लोग घायल हुए.04 मार्च, 2010: उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में कृपालु महाराज के राम जानकी मंदिर में भगदड़ मचने से लगभग 63 लोगों की मौत हो गई, क्योंकि लोग स्वयंभू बाबा से मुफ्त कपड़े और भोजन लेने के लिए जमा हुए थे.30 सितंबर, 2008: राजस्थान के जोधपुर शहर में चामुंडा देवी मंदिर में बम विस्फोट की अफवाह के कारण मची भगदड़ में लगभग 250 श्रद्धालु मारे गए और 60 से ज्यादा घायल हुए।

03 अगस्त, 2008: हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में नैना देवी मंदिर में चट्टान गिरने की अफवाह के कारण मची भगदड़ में 162 लोग मारे गए, 47 घायल हुए.

25 जनवरी, 2005: महाराष्ट्र के सतारा ज़िले में मंधारदेवी मंदिर में वार्षिक तीर्थयात्रा के दौरान 340 से ज़्यादा श्रद्धालु कुचलकर मारे गए और सैकड़ों घायल हो गए. यह दुर्घटना तब हुई जब कुछ लोग नारियल तोड़ते समय फिसलन भरी सीढ़ियों पर गिर गए.27 अगस्त, 2003: महाराष्ट्र के नासिक जिले में कुंभ मेले में पवित्र स्नान के दौरान भगदड़ में 39 लोग मारे गए और लगभग 140 घायल हो गए.

हर साल कांवड यात्राओं में और गणेश विसर्जन कार्यक्रम के दौरान सैकड़ों अति उत्साही युवाओं की मौत के आकड़े अलग है और उनकी तादाद हर साल दो सौ से पांच सौ से अधिक जीवन असमय मृत्यु के शिकार बन रहे हैं। यानि जीवन की कीमत पर आस्था और श्रद्धा का प्रदर्शन किया जा रहा है।

इन सब घटनाओं में सबसे महत्वपूर्ण और शर्मनाक स्थिति यह भी है कि हमारे श्रद्धालुओं में आपसी सद्व्यवहार परस्पर सुरक्षा की भावना और सिविल सैंस का अभाव स्व अनुशासित नहीं होना कभी कभी तो निरंकुश और अराजकता भरा व्यवहार बेहद अस्वीकार्य माहौल बनाता है उनमें एक दूसरे से पहले दर्शन या स्नान करने की होड़ अनियंत्रित भीड़ में घुसकर धार्मिक कार्य पूर्ण करने की आस्था और धैर्य व आपसी सहयोग के स्थान पर सिर्फ स्वार्थ या अपने बचाव के लिए संकल्पित होना बेहद गंभीर हैवानियत भरा व्यवहार है। जब कम स्थान में स्थान की क्षमता से कई गुना अधिक तादाद में श्रद्धालु कथा सुनने स्नान दर्शन करने या पुरी जैसे शोभा यात्रा कार्यक्रम में शामिल होने बांके बिहारी वैष्णो देवी जैसे भारी आवागमन वाले देवस्थान पर पहुंचते हैं तो उन्हें सबसे पहले अपनी परिवार महिलाओं व बच्चों की सुरक्षा का आकलन करने के बाद भीड़ में प्रवेश करना चाहिए। प्रशासन को भी एक नियंत्रित संख्या में लोगों को जुटने की छूट देना चाहिए साथ ही विशेष दर्शन या आयोजन तिथि पर आने वाले लोगों का तमाम आकलन करने के बाद भीड नियंत्रित करने के पर्याप्त इंतजाम करना चाहिए। इस के अलावा सबसे ज्यादा जरूरी श्रद्धालुओं को संयम धैर्य बनाए रखने और अफवाहों पर ध्यान नहीं देने के लिए बारंबार अवगत कराना है। लेकिन सिर्फ श्रध्दालुओं से अधिकाधिक पर्यटन के जरिए रोजगार राजस्व जुटाने की मानसिकता में लगी सरकार और उसके तंत्र श्रध्दालुओं की जान की परवाह नहीं करते हैं यही वजह है कि कोई भी बड़ा आयोजन बिना हादसे के जनहानि के संपन्न नही हो रहा है।

मनोज कुमार अग्रवाल

उधम सिंह सरदार: एक गोली, सौ सालों की गूंज

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: उधम सिंह केवल एक क्रांतिकारी नहीं थे, बल्कि एक विचार थे—संयम, संकल्प और सत्य का प्रतीक। जलियांवाला बाग़ के नरसंहार का प्रत्यक्षदर्शी यह वीर 21 वर्षों तक चुपचाप अपने मिशन की तैयारी करता रहा और लंदन जाकर ओ'डायर को गोली मारकर भारत का प्रतिशोध पूरा किया। उनकी चुप्पी न्याय की गर्जना थी, जो आज भी हमें अन्याय के खिलाफ खड़े होने की प्रेरणा देती है। आज उनकी याद केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि आत्ममंथन की पुकार है—क्या हम उधम सिंह के उत्तराधिकारी बन पाए हैं?

भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई केवल तलवारों की टंकार या जुलूसों की गूंज नहीं थी, वह उन आंखों में पलते संकल्पों की लड़ाई थी, जो वर्षों तक प्रतिशोध को अपनी आत्मा में पाले रही। वह उन लोगों की कहानी थी, जो नारे नहीं लगाते थे, लेकिन भीतर ही भीतर एक ज्वालामुखी की तरह उबलते रहते थे। उन ज्वालाओं में से एक नाम था — उधम सिंह।

उधम सिंह, जिन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी में अपने साथियों का खून देखा। जिन्होंने अपने जीवन को एक ही लक्ष्य के लिए समर्पित कर दिया — न्याय। यह कहानी है एक ऐसे वीर की, जो किसी अखबार की सुर्ख़ी नहीं बना, लेकिन इतिहास की सबसे करारी चोट साबित हुआ।

13 अप्रैल 1919, अमृतसर। बैसाखी का त्यौहार था। जलियाँवाला बाग में हज़ारों लोग शांतिपूर्वक एकत्र थे। किसी ने कल्पना नहीं की थी कि यह दिन इतिहास के सबसे रक्तरंजित दिनों में तब्दील हो जाएगा। जनरल डायर की क्रूरता ने मासूमों पर गोलियों की बौछार कर दी। न कोई चेतावनी, न कोई चेतावक विचार। निहत्थे लोगों पर मशीनगनों से फायरिंग हुई। लाशों की चादर बिछ गई। सैकड़ों लोग मारे गए, और हज़ारों ज़ख़्मी। पूरा बाग खून से लाल हो गया।

उसी नरसंहार में एक 20 वर्षीय युवा घायल, लेकिन जीवित बचा—उधम सिंह। उन्होंने न केवल उस घटना को देखा, बल्कि उसे अपने सीने में पत्थर की तरह गड़ा लिया। उन्होंने न शोर मचाया, न कोई शिकायत की। पर उनके अंदर एक ज्वाला धधक रही थी, जो शांति से नहीं बुझने वाली थी।

उधम सिंह ने अपने जीवन को एक ही दिशा दी—इस क्रूरता का बदला लेना। उन्होंने प्रतिशोध नहीं, न्याय की भाषा चुनी। वे वर्षों तक खामोशी से तैयारी करते रहे। अपने देश से दूर जाकर दुश्मन की धरती पर खड़े होकर भारत का परचम लहराने का उन्होंने प्रण लिया। यह कोई आवेश में किया गया कार्य नहीं था, यह एक सुनियोजित नैतिक युद्ध था।

1934 में वे लंदन पहुँचे। वहाँ वे गुमनाम ज़िंदगी जीते रहे। उनका मकसद केवल ओ'डायर तक पहुँचना था—वह व्यक्ति जिसने जनरल डायर के कत्लेआम को समर्थन और सम्मान प्रदान किया था। 13 मार्च 1940 को वह दिन आया, जब उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के एक सभागार में जाकर, कैक्सटन हॉल में ओ'डायर को गोली मारी। वह गोली केवल एक शरीर को नहीं भेदती थी, वह एक साम्राज्य की आत्मा को झकझोर देती थी।

उधम सिंह वहीं गिरफ्तार हुए। उन्होंने भागने की कोई कोशिश नहीं की। अदालत में खड़े होकर उन्होंने गर्व से कहा, "मैंने मारा है। यह प्रतिशोध नहीं, न्याय है। मैं अपने देश के लिए मरने जा रहा हूँ, और मुझे इस पर गर्व है।" उनके चेहरे पर न पछतावा था, न भय। वह एक आत्मा थी, जो न्याय के सिद्धांत पर अडिग थी।

ब्रिटिश शासन की नींव को यह घटना अंदर तक हिला गई। एक भारतीय, साम्राज्य की राजधानी में आकर, खुलेआम न्याय कर गया। यह केवल एक हत्या नहीं थी, यह अंग्रेज़ी सत्ता के खिलाफ एक नैतिक घोषणापत्र था। उधम सिंह ने यह दिखा दिया कि भारतवासी केवल लड़ाई के मैदान में ही नहीं, विवेक और साहस के साथ भी लड़ सकते हैं।

आजादी के बाद भारत ने उधम सिंह को "शहीद-ए-आज़म" की उपाधि दी। लेकिन क्या हम सच में उनके विचारों और बलिदान के योग्य उत्तराधिकारी बन पाए हैं?

आज भी हमारे देश में अन्याय मौजूद है। बलात्कारियों को राजनीतिक संरक्षण मिलता है, पत्रकार जेलों में बंद हैं, गरीब किसान आत्महत्या कर रहा है और सत्ता मौन है। क्या यही वह भारत है, जिसकी कल्पना उधम सिंह ने की थी? क्या हममें से किसी के भीतर वैसी आग बची है?

उधम सिंह ने बंदूक चलाई थी, लेकिन वह गोली भारत की चेतना को जगा गई थी। वह गोली एक उदाहरण थी, कि अगर अन्याय को सहा गया, तो वह बार-बार दोहराया जाएगा। उन्होंने यह दिखाया कि सच्चा राष्ट्रभक्त वह नहीं जो तिरंगा लहराकर भाषण देता है, बल्कि वह है जो अन्याय के सामने कभी न झुके।

आज जब हम राष्ट्रवाद के नाम पर नफ़रत का बाज़ार सजते देख रहे हैं, तो उधम सिंह का नाम हमें आइना दिखाता है। उन्होंने कभी किसी धर्म, जाति या पार्टी के नाम पर संघर्ष नहीं किया। उनका उद्देश्य केवल एक था—न्याय और स्वतंत्रता।

उनकी जयंती या पुण्यतिथि पर हम मोमबत्तियाँ जलाते हैं, प्रतिमाओं पर फूल चढ़ाते हैं। लेकिन यह श्रद्धांजलि तब तक अधूरी है जब तक हम उनके विचारों को अपने जीवन में न उतारें। देशभक्ति केवल एक दिवस की भावना नहीं हो सकती। वह एक निरंतर जागरूकता है, जो हर अन्याय के खिलाफ आवाज़ बनकर उठती है।

आज के युवाओं के लिए उधम सिंह एक आदर्श हैं। एक ऐसा आदर्श जो कहता है — "धैर्य रखो, पर चुप मत रहो। तैयारी करो, पर डर मत खाओ। न्याय माँगो नहीं, उसे प्राप्त करो।"

अगर हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सच्चे नागरिक बनें, तो हमें उन्हें उधम सिंह की कहानी केवल पाठ्यपुस्तकों से नहीं, बल्कि जीवन के उदाहरणों से सिखानी होगी। उनकी तस्वीर केवल दीवार पर न टांगे, बल्कि उनके सिद्धांतों को अपने आचरण में उतारें।

भारत को आज भी उधम सिंह जैसे लोगों की ज़रूरत है। जो सत्ता से नहीं डरते, जो सत्य के लिए खड़े होते हैं, और जिनकी दृष्टि केवल अपने स्वार्थ तक सीमित नहीं होती। हमें उधम सिंह को केवल 'अतीत' नहीं, 'वर्तमान' बनाना होगा।

जिस दिन हम अपने चारों ओर अन्याय देखकर चुप नहीं रहेंगे, उसी दिन उधम सिंह का बलिदान सच्चे अर्थों में सार्थक होगा। वह दिन जब हर नागरिक अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज़ बन जाएगा—वही दिन उधम सिंह के भारत की शुरुआत होगी।

उधम सिंह की एक गोली ब्रिटेन की संसद में चली थी, लेकिन उसकी गूंज आज भी भारत की आत्मा में है। वह गूंज हमें हर रोज़ पूछती है—क्या तुम तैयार हो अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए? क्या तुम केवल श्रद्धांजलि देने आए हो या उनके जैसे कुछ करने का साहस भी रखते हो?

उधम सिंह सरदार केवल एक नाम नहीं, एक विचार हैं। वह विचार जो कहता है कि आज़ादी केवल राजनीतिक नहीं, नैतिक साहस से मिलती है। वह विचार जो हमें बार-बार याद दिलाता है कि क्रांति केवल तलवार से नहीं, आत्मा के विश्वास से होती है।
उधम सिंह, तुम्हें नमन!
तुम्हारी वह एक गोली आज भी हमें जगाने के लिए काफ़ी है।

प्रियंका सौरभ

आधा-अधूरा कृत्रिम मेधा का ज्ञान देश की सुरक्षा के लिए खतरनाक

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आपकी नब्ज पढ़कर आपके मस्तिष्क की बात तुरंत पकड़कर उस पर अमल करने लगेगा। कृत्रिम मेधा की तकनीक को वैज्ञानिकों ने मानव की सहायता के लिए और देश की बेहतरी के लिए अविष्कार किया है।

अभी तक तो अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, इजरायल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मामले में काफी आगे हो गये हैं। अब खाड़ी के देशों विगत 5 साल में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति केवल तेल के कुए पर न रह कर अन्य योजनाओं पर भी काम करना शुरू कर दिया है। आश्चर्यजनक रूप से यूएई, सऊदी अरबिया, कतर, मिस्र, जॉर्डन, मोरक्को और अन्य देशों में यूरोप की तुलना में अब और ज्यादा खर्च करके आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक को अपने देश में बहुत मजबूत बना लिया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जितने फायदे हैं उससे ज्यादा विकासशील देशों के लिए यह नुकसानदेय भी हो सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आपकी पल्स रीडिंग और मानसिक विचारधारा को केवल थंब इंप्रेशन में ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का डिवाइस पढ़ कर उस पर अमल कर सकता है।इस टेक्नोलॉजी से अमेरिका तथा यूरोपीय देश अब तक दुश्मन की अनेक सूचनाएं बड़ी आसानी से प्राप्त कर उसका सामरिक उपयोग करने में लगे हुए हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग रूस अपनी टेक्नोलॉजी का उपयोग कर मिसाइल दागने में यूक्रेन यूक्रेन के विरुद्ध कर रहा है। अब तक यूक्रेन यूरोपीय तथा नाटो देश की मदद से इसी तकनीक के सहारे रूस के विरुद्ध अब तक टिका हुआ है। वैसे यूक्रेन और रूस का युद्ध में काफी नुकसान हुआ है पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भरपूर उपयोग दोनों देश एक दूसरे पर कर रहे हैं।

विकासशील देशों में इस टेक्नोलॉजी का विकास अभी काफी एडवांस नहीं है इन परिस्थितियों में उनके लिए उनके सामरिक महत्व की चीजें छुपाना दुश्मन देशों के सामने कठिन हो जाएगा और उनकी खुफिया जानकारी शक्तिशाली देश आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस केवल एक सूत्र प्राप्त करने के बाद ही पूरी प्राप्त कर सकते हैं।

खाड़ी के देश जिनमें सऊदी अरबिया, कतर, मिस्र, जॉर्डन, यूएई अपने बजट का 34% बढ़ा हुआ हिस्सा एआई तकनीक पर लगातार कर रहे हैं। खाड़ी के देश इस टेक्नोलॉजी का उपयोग इस वजह से कर रहे हैं क्योंकि यह उनकी भविष्य की योजनाओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है जिससे वे तेल की कमाई से हटकर अन्य साधनों से अपनी अर्थव्यवस्था में सुधार ला सकें। यूं एई पहला देश है जिसने 2017 ने इस तकनीक को अपनाया था इसके बाद खाड़ी के देशों में अब टेक्नोलॉजी को अपनाने में होड़ हो गई है। यह सभी देश एआई टेक्नोलॉजी पर लगभग 3 अरब डॉलर खर्च कर चुके हैं। दूसरी तरफ यदि इसका इस्तेमाल अति विशेषज्ञों द्वारा नहीं किया गया तो इसका दुरुपयोग जिन देशों के पास इन टेक्नोलॉजी से एडवांस टेक्नोलॉजी है वह पूरी जानकारी निकालने में सक्षम होंगे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग यूरोपीय देश न सिर्फ सामरिक महत्व की चीजों में कर रहे हैं बल्कि मेडिकल साइंस और अंतरिक्ष विज्ञान में भी पूरी तरह हो रहा है और इससे बहुत फायदे भी मिल रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव प्रजाति के लिए जितना फायदेमंद है दूसरी तरफ उतना ही नुकसान दे और इससे वैश्विक शांति को खतरा भी हो सकता है। राइट एक्टिविस्ट मानते हैं कि रोबोट की तरह इस तरह की विज्ञान पर आधारित चीजें माननीय प्रजाति को खत्म कर सकती है बल्कि उनकी चिंता डेटा सुरक्षा प्रपो गेंडा सर्विलांस के विरुद्ध होने वाले नुकसान पर भी ज्यादा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर खाड़ी के देशों ने एआई के इस्तेमाल पर दिशा निर्देश तय कर उसे जारी किया है हालांकि इस पर कोई कानूनी बाध्यता नहीं है फिर भी इसका दुरुपयोग होने से मानव को खतरा भी हो सकता है यह एक वैश्विक चिंता की बात है।

संजीव ठाकुर
स्तंभकार, चिंतक, लेखक
रायपुर छत्तीसगढ़

भजन सेवा बिना न मिले मेवा

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: बिना बड़ाई किए, तारीफ किए बिना राजनीति नहीं हो सकती। गांव गलियों में जनता को तारीफों से बांधकर, उनके पैरों पर पड़कर, स्तुति-गान करते हुए वोट मांगने से राजनीति की शुरुआत होती है। उसके बाद जो नेता उसे आगे बढ़ा सकते हैं, ऐसे नेता को भगवान मानकर उनकी तारीफों के कसीदे काढ़कर, उन्हें मदिरा में स्नान करवाकर, अपने लिए सीट पक्का किया जाता है। पैसे फेंक कर जीतना होता है। जीत से यात्रा रुकनी नहीं चाहिए. इसके लिए बड़े नेता को पकड़कर उन्हें भी अपनी तारीफों की दुनिया का शहंशाह बनाना होता है। इन प्रशस्ति गीतों में थोड़ी सी लय और ताल बिगडे तो सारे किए कराए पर पानी फिर जाएगा। इसलिए हर वक्त बहुत ज्यादा जागरूक होकर कीर्तन भजन रूपी तारीफों से उसका अभिषेक करें, तभी मन चाहे पद, भारी वरदानों की बारिश होगी। इन सब को हासिल करने के लिए भजन कीर्तन जरूरी है। रग रग में प्रशंसा करने का अद्भुत गुण भरा होना चाहिए। जीभ को तरह-तरह से घुमाते हुए पुल बांधना होगा तारीफों का। पहले चार फिर चालीस लोगों की एक साथ तारीफ करने की बात ऐसे छुट भैयों से नेता बने लोगों के लिए बाएं हाथ का खेल है।

तारीफों के पुल बांधना मतलब बकवास नहीं है। वह एक सेवा का मार्ग है। नेता की सेवा करने का एक विधि विधान है। इसमें कई तरह की बातें शामिल हैं। बड़े नेता-भगवान के नाम पर कई तरह की खेल प्रतियोगिताएं की जाती हैं। पाठशालाओं, भवनों, बाज़ारों को उनके नाम पर नामकरण किया जाना, उनके जन्मदिन पर कई मंदिरों में पूजा-अर्चना, गलियों में यज्ञ आदि के साथ-साथ बड़े कट-आउट चित्रों को दूध से अभिषेक किया जाता है। उन महान नेताओं के कामों को मूल में रखकर नए-नए गीत बनाकर गाना, बैंड बाजों के साथ में उनके नाम का हल्ला मचाना, माइकों पर दिनभर प्रशस्ति गान गला फाड़ फाड़ कर किया जाना, यह सब नेता-भगवान के प्रसाद के रूप में दिया जाने वाले प्रयासों की सूची है।

नेताओं के भजन के पीछे जन-प्रयोजन भी छिपे हैं। प्रशंसा की प्रक्रिया एक बड़ा उद्योग है। सड़कों के दोनों तरफ भारी बैनर, पोस्टर, कट-आउट, बैंड बाजा, डीजे, द्रव और ठोस आहारों का व्यय, ईंधन तेल का खर्चा, बिरयानी के पैकेट, ट्रकों पर नारे लगाते मजदूर, साथ चलने वाले कार्यकर्ता, झंडे उठाने वाले श्रमिक। इस प्रकार कई तरह के लोगों को काम देते हुए, सालाना भारी टर्नओवर के साथ कई और उद्योगों को आसरा देते हुए उन्हें लाभ पहुंचाते हुए, प्रत्यक्ष कई लोगों को और अपरोक्ष रूप से और कुछ लोगों को रोजगार देता है यह प्रशंसा क्षेत्र। तारीफ़ों को बंद कर दिया जाए तो यह सब कुछ समाप्त।

चारण भाटों का रिवाज हमारे यहां राजा महाराजाओं के जमाने से चला रहा है। इस विरासत के तहत यह विश्वास किया जाता है कि तारीफ या प्रशंसा जो है, वह उम्र बढ़ाती है उसकी, जिसकी तारीफ की जाती है। प्रशस्ति गान करके देखो, सामने वाले का चेहरा चंद्रमा की तरह खिलखिला जाता है। फिर सामूहिक स्तुति-गान सुनकर तो बाँछें खिल जाती हैं। लगता है स्वर्ग में आसन ग्रहण करने के बाद वहां के गायकों का मधुर गान सुन रहे हैं। यह गाने वाले यानी तारीफ करने वाले और सुनने वालों को ही इसमें निहित आनंद का पता चलता है। लेकिन उन्हें क्या पता जो प्रशस्ति गान शुरू करते ही 'अब यार! कान मत पकाओ। असहनीय हो रहा है। अपना अपना काम करो यह भजन बंद करके' कहते हैं।

नेताओं के नाम लेते ही हमें सबसे पहले सफेद धोती, खादी के कमीज, ए सी वाहन, सफारी सूट, गनमैन, तेजी से दौड़ते कॉन्वॉय, लाल बत्ती लगी सफेद गाड़ियां, पसीने से लथपथ पुलिस वाले, काम धाम छोड़कर दौड़ भाग कर आती जनता यही सब याद आते हैं। इन सब के लिए पूंजी क्या है? वह है तारीफों के पुल, प्रशस्ति गान, प्रशंसाओं के पर्वत। यही सब बुनियाद हैं, नींव हैं। धूम्रपान हानिकारक है, मदिरापान जान लेवा है कहते है लेकिन स्तुति-पान, प्रशंसा पेय हानिकारक है- कोई नहीं कहता। दो तारीफ़ें करके पद पाना, चार ठेके हासिल करना, थोड़ा बहुत रुपया इकट्ठा करने के लिए ही तो राजनीति में आते हैं न? उसी प्रशंसा-अमृत से ही परहेज करोगे तो कैसे चलेगा? प्रशस्ति गान करना राजनयिकों का जन्म सिद्ध अधिकार है। अधिनायक को जय हे कहते हुए कीर्ति गान करने की स्वेच्छा, स्वतंत्रता को भी नेस्तनाबूद किया जाए और तारीफों को निषिद्ध माना जाए तो फिर राजनीति किस लिए?

डॉ टी महादेव राव
विसखपटनम (आंध्र प्रदेश)

एलियन का पृथ्वी पर आने का भ्रम कब तक छाया रहेगा

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: वॉशिंगटन में एलियंस को लेकर सालों से अजीब अजीब दावे किए जाते रहे हैं। कई वैज्ञानिकों का मानना है कि ब्रह्मांड में सिर्फ पृथ्वी ही नहीं हो सकता है जहां जीवन है, बल्कि कई ऐसे ग्रह हो सकते हैं, जहां जीवन होने की संभावना है। इस बीच एक नये स्टडी रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पृथ्वी की तरफ एक अंतरिक्ष यान काफी तेज रफ्तार से बढ़ रहा है और वो विमान एलियंस का हो सकता है। एक जानकारी के मुताबिक स्टडी रिपोर्ट में कहा गया है कि नवंबर तक एलियन हमारे ग्रह तक पहुंच सकते हैं और हमला कर सकते हैं। शोधकर्ताओं ने दावा किया है कि पृथ्वी की तरफ तेज रफ्तार से बढ़ रहा ऑब्जेक्ट 3I/ ATLAS (जिसे पहले A11pl3Z के रूप में जाना जाता था), वो एक एलियन विमान हो सकता है, जो हमारे ग्रह पर एक आश्चर्यजनक हमला कर सकता है। इस स्टडी रिपोर्ट को जारी करने वाले वैज्ञानिक का नाम एवी लोएब है, जो हार्वर्ड विश्वविद्यालय में खगोलविद हैं। उन्होंने एलियंस के ऊपर एक किताब भी लिखी है और वो हमेशा से दावा करते रहे हैं कि पृथ्वी पर एलियन का हमला होना निश्चित है। एलियंस की अफवाह सोशल मीडिया पर उड़ रही है कि राजस्थान के नागौर गांव में एलियन उतरे। इसकी पुष्टि नही हो पाई है। हर साल दिसंबर में नए साल के दो सप्ताह में ये अफवाहें हर साल उड़ाई जाती है। एलियंस प्रकाश के माध्यम से आना जाना करते। उनकी रफ्तार इतनी ज्यादा होती की वो आज तक धरती वासियों की पकड़ से दूर रहे है। इसलिए इनके द्धारा बनाई जाने वाली चीजों को हम आश्चर्य के रूप में देखते आए है। दुनिया मे पहली बार एलियंस के जीवाश्म प्रदर्शन की खबर पढ़ी। पेरू के कुस्को में यूएफओ मलबे में मिले थे। यह जीवाश्म डायटम (शैवाल) खदानों में पाए गए थे जिन्हें के सेन लाजारो महल में एक हजार वर्ष कथित एलियंस के दो जीवाश्मों को पहली बार दुनिया के सामने पेश किया गया। सवाल ये उठता है कि दूसरे ग्रहों के एलियंस की बात दुनिया के सामने इतने वर्षों तक क्यों छुपाई गई| बाईट वर्षो की बात करें तो वर्ष 2004 में पेंटागन में 144 यूएफओ एवं पिछले वर्ष ब्रिटेन में 250 से ज्यादा एलियंस देखने के मामले सामने आए| अमेरिकी संसद में यूएफओ को लेकर पहली बार खुली सुनवाई रखी गई इस सुनवाई में अमेरिका का रक्षा मुख्यालय पेंटागन अपनी क्लासिफाइड फाइलों को खोलकर ये बताएगा कि आखिर एलियंस के बारे में अभी तक उसके पास क्या जानकारी है| दुनिया भर में यूएफओ और एलियंस को लेकर चुप्पी साध रखी है| खुली सुनवाई का परिणाम कुछ दिनों में स्पष्ट होकर सामने आएगा| एलियंस की सही और तथ्यात्मक तलाश और नए ग्रहों पर जीवन की पूर्ण संभावना खुले तौर पर स्पष्ट होकर चंद्रयान-3 के जरिये स्पष्ट हो सकेगी। चांद पर एलियन की बस्ती जैसी हवा विक्रम लेंडर अपनी खोज से एलियन की स्थिति भी स्पष्ट कर देगा। एक जानकारी के मुताबिक विदेश का एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें UFO जैसी चीज पानी के अंदर गायब हो गई। ऐसे में शोधकर्ता भी यही मान रहे कि एलियंस का बेस पानी के नीचे है। उन्हें लग रहा है कि महासागरों की अनंत गहराइयों में उनके बेस हो सकते हैं, जिस वजह से वो हमारी पकड़ में नहीं आ रहे। वैसे भी इंसान सिर्फ 5 प्रतिशत महासागर के बारे में जानते है। अभी कुछ दिनों पूर्व नासा के वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष में "हम्म" की आवाज सुनी। इससे उन्होंने अंदाजा लगाया कि ये एलियन की ही आवाज हो सकती है। जो हमसे संपर्क करना चाहते हैं। आवाज पर अब शोध हो रहा है। नार्वे स्थित मैसेजिंग एक्सट्राटेरेस्ट्रायल इंटेलिजेंस के वैज्ञानिकों ने एलियन को गत वर्ष भेजा संदेश जिसमे गणना, अंकगणित और ज्यामिति से जुड़ी सूचनाओं के साथ घडी देखने की तकनीक के अलावा वहां पर पानी या जीवन होने का पता लगाना भी प्रमुख है| उम्मीद लगभग एक माह में जवाब मिल जाने की उम्मीद कर रहे थे वैज्ञानिक| एलियन के आवाज के कोड को पहचानना पृथ्वीवासियों के लिए बहुत मुश्किल कार्य है। और इसे समझने में और हमारी भाषा उन्हें समझने में वर्षों लग जाएंगे। कई वैज्ञानिक इन्हें तारे जी जे 273 से जो की सूर्य से 12 प्रकाश वर्ष दूर स्थित रहने का दावा करते है| एक जानकारी के मुताबिक अमेरिका की धरती पर भारतीय यंत्र बना दिखाई दिया। जिसकी लंबाई किलोमीटर में है। देश विदेश में कई आश्चर्यजनक निर्मित आकृतियां, मंदिर आदि बने हुए देखे गए। जोकि इंसानों द्धारा निर्मित नहीं हो सकते। ये बाहरी दुनिया एलियंस द्वारा निर्मित हो सकते है। शायद इन्हे निर्मित करने का उद्देश्य धरती पर पहचान स्वरूप चिन्ह अंकित करने का रहा हो| यूएफओ, एलियंस प्रकाश के माध्यम से आना जाना करते। उनकी रफ्तार इतनी ज्यादा होती की वो आज तक धरती वासियों की पकड़ से दूर रहे है। इसलिए इनके द्धारा बनाई जाने वाली चीजों को हम आश्चर्य के रूप में देखते आए है। किंतु इन पर शोध करने की गति भी काफी धीमी है। किंतु इन पर शोध करने की गति भी काफी धीमी है। देखा जाए तो यूएफओ और एलियंस के वीडियो व् उसपे आधरित काल्पनिक फिल्मे कई वर्षो से देखते आरहे है| अमेरिका में एरिया 51 है जो प्रतिबंधित क्षेत्र है| वहां पर भी एलियंस, यूएफओ के होने रहस्य बरक़रार है| समुद्र में रहस्यमयी क्षेत्र बरमुंडा त्रिकोण में एलियन का अड्डा होने की बातें फैलाई जाती रही है| यह भी प्रश्न सोचने को मजबूर कर देता है की अमेरिका व् अन्य देशों के पास कई तरह की मिसाइल जैसे हवा से हवा में मार करने वाली है व् अन्य सक्षम, सशक्त टेक्नॉलॉजी मौजूद होने के बावजूद यूएफओ और एलियन को आज तक क्यों नहीं पकड़ पाई| भारत में इनके देखे जाने की घटनाएं ज्यादा सुर्ख़ियों में नहीं आई है| पृथ्वी पर इंसानों की तरह अन्य ग्रहों पर रहवासी हो सकते है, उनका रहन सहन, क्या खाते होगें, उनके परिवार कैसे बनता होगा? ये सब बातें खोजने के लिए शायद करोडो वर्ष लगेंगे उस दिशा में सभी देशों की चाल चींटी की चाल साबित हो रही है। ये सारे राज जो अब तक स्पष्ट नहीं हो सकें थे सिर्फ काल्पनिक दुनिया से देखे जा रहे थे कुछ देश एलियन के देखे जाने का दावा करते आ रहे थे| अब चंद्रयान-3 के जरिये स्पष्ट हो सकेगी। चांद पर एलियन की बस्ती है या नही। विक्रम लेंडर अपनी खोज से एलियन की स्थिति भी स्पष्ट कर देगा। एलियंस की सही और तथ्यात्मक तलाश और नए ग्रहों पर जीवन की पूर्ण संभावनाएं खुले तौर पर स्पष्ट हो ताकि शिक्षा के पाठ्यक्रमों से जोड़ा जाकर ज्ञानार्जन में वृद्धि हो सके| ये सारे राज जो अब तक स्पष्ट नहीं हो सकें थे सिर्फ काल्पनिक दुनिया से देखे जा रहे थे कुछ देश एलियन के देखे जाने का दावा करते आरहे थे| अब जो यान अंतरिक्ष में भेजे गए उनक जरिये स्पष्ट हो सकेगी। चांद पर एलियन की बस्ती जैसी हवा विक्रम लेंडर अपनी खोज से एलियन की स्थिति भी स्पष्ट कर देगा।

संजय वर्मा "दृष्टि"

सेल ने आईएनएस अजय और आईएनएस निस्तार के लिए इस्पात आपूर्ति कर, रक्षा आत्मनिर्भरता को मजबूत किया

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (नई दिल्ली): भारत की सबसे बड़ी इस्पात उत्पादक कंपनी, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) ने भारतीय नौसेना के दो महत्वपूर्ण जहाजों, आईएनएस 'अजय' और आईएनएस 'निस्तार' के लिए विशेष इस्पात की आपूर्ति करके देश के रक्षा स्वदेशीकरण प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इन दोनों जहाजों में से आईएनएस 'अजय' को गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) द्वारा पिछले जुलाई महीने के दौरान लांच किया गया जबकि आईएनएस निस्तार को भी पिछले जुलाई महीने के दौरान ही हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एचएसएल) द्वारा कमीशन किया गया।

आईएनएस 'अजय' के लिए सेल ने ज़रूरत की पूरी डीएमआर ग्रेड स्टील प्लेट्स की आपूर्ति की है, जो इस उच्च-गुणवत्ता वाले इस्पात पोत की संरचनात्मक मजबूती और स्टील्थ क्षमताओं के लिए महत्वपूर्ण है। आईएनएस 'अजय' गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) द्वारा निर्मित आठवां और अंतिम स्वदेशी एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट (एएसडब्ल्यू-एसडब्ल्यूसी) है।

इसी तरह से सेल ने हाल ही में कमीशन किए गए आईएनएस निस्तार के लिए विशेष ग्रेड प्लेट्स की जरूरत की पूरी मात्रा की सप्लाई की है। आईएनएस निस्तार भारत का पहला स्वदेशी रूप से डिज़ाइन और निर्मित डाइविंग सपोर्ट वेसल (डीएसवी) है।

हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा कमीशन की गई आईएनएस निस्तार, पनडुब्बी बचाव कार्यों, गहरे समुद्र में गोताखोरी और निरंतर गश्त में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

सेल, भारत की नौसैनिक शक्ति को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो राष्ट्रीय रक्षा लक्ष्यों के लिए कंपनी के रणनीतिक सहयोग को दिखाता है। यह 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण में सेल की अभिन्न भूमिका को भी रेखांकित करता है।

इस्पात के प्रत्येक टन के साथ, सेल भारत की समुद्री तत्परता और रक्षात्मक भरोसे की नींव को निरंतर सुदृढ़ कर रहा है।

कैट व्यापारियों के लिए संसद में हुआ विशेष दौरा, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने किया संबोधित

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (नई दिल्ली): संसद सदस्य एवं कॉन्फेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल के नेतृत्व में आज संसद में कैट के व्यापारियों के लिए एक विशेष दौरे का आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक अवसर पर देशभर से आए लगभग 150 प्रमुख व्यापारी नेताओं को नए और पुराने संसद भवन का भ्रमण कराया गया और उन्हें संसद सत्र का प्रत्यक्ष अनुभव करने का अवसर भी मिला।

इस दौरे का मुख्य आकर्षण तब बना जब कैट व्यापारियों को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने संसद परिसर स्थित अपने मीटिंग कक्ष में संबोधित किया। अपने संबोधन में श्री बिड़ला ने कहा कि "कैट व्यापारियों का देशव्यापी संगठन है, जो पूरे देश में व्यापारियों के लिए कार्य कर रहा है। व्यापारी और व्यापार देश की रीढ़ की हड्डी है। व्यापारी न केवल रोजगार सृजित करता है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।"

उन्होंने आगे कहा कि बदलते हुए आर्थिक वातावरण को ध्यान में रखते हुए व्यापारियों को अपने स्तर को ऊँचा उठाना होगा। हम सभी को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संदेश को दोहराते हुए कहा कि "व्यापारियों को देश और अपने हित मे अब स्वदेशी समान बेचना और खरीदना चाहिए"

लोकसभा अध्यक्ष ने उपस्थित व्यापारियों को आश्वस्त किया कि व्यापार और व्यापारियों से जुड़े मुद्दों को उनके संज्ञान में लाया जाए तो वे अधिक से अधिक व्यापार से जुड़े विषयों को संसद में चर्चा के लिए लाने का प्रयास करेंगे।

इस अवसर पर सांसद एवं कैट के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने कहा कि "देश के व्यापारी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ पूरी मजबूती से खड़े हैं। हम उनके 'भारतीय सामान खरीदो और बेचो' के आह्वान का पूर्ण समर्थन करते हैं और 10 अगस्त से पूरे देश में स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया जाएगा। यह अभियान भारत के आर्थिक स्वाभिमान को मजबूत करेगा और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।"

यह आयोजन कैट व्यापारियों के लिए एक ऐतिहासिक क्षण रहा, जब पहली बार व्यापारियों को संसद में इस प्रकार की विशेष सौगात और लोकसभा अध्यक्ष से सीधे संवाद का अवसर मिला।

श्रद्धांजलि

***दिशोम गुरु शिबू सोरेन: की मृत्यु एक युग का अंत है, शिबू सोरेन केवल एक व्यक्ति नहीं, एक विचारधारा थे। झारखंड की मिट्टी और झारखंडी समाज आपको हमेशा याद रखेंगे।**

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (रांची): झारखंड की मिट्टी का वह सपूत, जिसने दलित आदिवासी मूलवासी समाज की आवाज को न केवल बुलंद किया, बल्कि उसे एक नई पहचान दी, दिशोम गुरु शिबू सोरेन अब हमारे बीच नहीं हैं। उनकी असमायिक मृत्यु ने न सिर्फ झारखंड, बल्कि पूरे देश को शोक में डुबो दिया है। शिबू सोरेन का जीवन केवल एक नेता की कहानी नहीं, बल्कि एक ऐसे क्रांतिकारी की गाथा है, जिसने अपने लोगों के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया। यह लेख उनकी अनकही कहानियों, उनके अनछुए पहलुओं, और उनकी अमर विरासत को समर्पित है।

एक साधारण जीवन, असाधारण सपने- 11 जनवरी 1944 को रामगढ़ के नेमरा गांव में जन्मे शिबू सोरेन का बचपन गरीबी और अभावों से भरा था। उनके पिता, सोबरन मांझी, एक सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्होंने आदिवासियों के शोषण के खिलाफ आवाज उठाई। 1957 में उनके पिता की हत्या ने 13 वर्षीय शिबू के जीवन को बदल दिया। यह त्रासदी उनके लिए एक टर्निंग पॉइंट थी, जिसने उन्हें स्कूल छोड़कर सामाजिक न्याय की लड़ाई में कूदने को मजबूर किया।

अनछुआ पहलू: कम लोग जानते हैं कि शिबू सोरेन ने अपनी युवावस्था में कविताएँ लिखी थीं। ये कविताएँ आदिवासी संस्कृति, प्रकृति, और शोषण के खिलाफ विद्रोह की भावना से भरी थीं। उनकी एक कविता की पंक्तियाँ थीं:
"जंगल हमारा, जमीन हमारी,
फिर क्यूँ भटके हम बेगाने?
हक छीन लो, उठो मेरे भाई,
बनो अपने भाग्य के विधाता।"

ये पंक्तियाँ बाद में धनकटनी आंदोलन का आधार बनीं, जिसमें आदिवासी युवाओं ने महाजनों के खेतों से जबरन धान काटकर अपनी जमीन और सम्मान की रक्षा की।

धनकटनी आंदोलन: विद्रोह का पहला स्वर- 1960 के दशक में शिबू सोरेन ने धनकटनी आंदोलन शुरू किया, जो आदिवासियों के आर्थिक शोषण के खिलाफ एक सशक्त विद्रोह था। तीर-धनुष से लैस युवा, शिबू के नेतृत्व में, सूदखोरों और जमींदारों के खेतों से फसल काटकर लाते थे। यह आंदोलन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक अस्मिता की रक्षा का प्रतीक था।

अनछुआ पहलू: इस आंदोलन के दौरान शिबू सोरेन ने गाँव-गाँव में "सांस्कृतिक जागरण सभाएँ" आयोजित कीं, जहाँ आदिवासी लोकगीत, नृत्य, और कहानियों के माध्यम से युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ा गया। वे मानते थे कि बिना सांस्कृतिक जागरूकता के कोई भी आंदोलन अधूरा है। इन सभाओं में वे खुद ढोल -मांदर बजाते और आदिवासी गीत गाते थे, जिससे युवाओं में जोश और एकता की भावना जागृत होती थी।

झारखंड मुक्ति मोर्चा: एक विचारधारा का जन्म- 1970 के दशक में शिबू सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की स्थापना की। उनका सपना था एक ऐसा झारखंड, जहाँ आदिवासी और मूलवासी अपने हक और सम्मान के साथ जी सकें। अलग झारखंड राज्य की मांग को उन्होंने जन-जन तक पहुँचाया। यह लड़ाई आसान नहीं थी। असंख्य कार्यकर्ताओं ने अपने प्राणों की आहुति दी, और शिबू सोरेन स्वयं कई बार जेल गए। 2000 में जब झारखंड राज्य बना, तो यह उनकी दृढ़ता और बलिदान का परिणाम था।

अनछुआ पहलू: शिबू सोरेन ने झामुमो के शुरुआती दिनों में एक "पंचायत पत्रिका" शुरू की थी, जो स्थानीय भाषाओं में छपती थी। इस पत्रिका में आदिवासियों के अधिकार, शिक्षा, और पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों पर लेख प्रकाशित होते थे। यह पत्रिका गाँवों में मुफ्त बाँटी जाती थी, ताकि साक्षरता और जागरूकता बढ़े। इस पहल को उन्होंने अपने निजी खर्च से चलाया, जो उनकी दूरदृष्टि को दर्शाता है।

मानवीय संवेदनशीलता: एक सच्चा जननायक- शिबू सोरेन की छवि एक कठोर और दृढ़ नेता की रही, लेकिन उनके करीबी जानते थे कि वे कितने संवेदनशील थे। वे रातों को गाँवों में घूमते, लोगों की समस्याएँ सुनते, और उनके साथ बैठकर चूल्हे पर बनी रोटी खाते। उनकी सादगी ऐसी थी कि केंद्रीय कोयला मंत्री रहते हुए भी वे सादा खाना और साधारण वस्त्र पसंद करते थे।

अनछुआ पहलू: शिबू सोरेन ने गुप्त रूप से कई आदिवासी बच्चों की शिक्षा का खर्च उठाया। उनके एक सहयोगी ने बताया कि वे अक्सर गाँव के स्कूलों में जाकर शिक्षकों से मुलाकात करते और बच्चों को किताबें वितरित करते थे। वे कहते थे, "शिक्षा ही वह हथियार है, जो हमें शोषण से मुक्ति दिलाएगा।" उनकी इस पहल के बारे में वे कभी सार्वजनिक रूप से नहीं बोले, क्योंकि वे मानते थे कि सेवा का कोई प्रचार नहीं होना चाहिए।

परिवार और व्यक्तिगत बलिदान- शिबू सोरेन की पत्नी, रूपी सोरेन, उनकी सबसे बड़ी ताकत थीं। उन्होंने आंदोलनों में शिबू का साथ दिया, लेकिन हमेशा पर्दे के पीछे रहीं। उनके बच्चों, विशेष रूप से हेमंत सोरेन, को उन्होंने हमेशा सिखाया कि सत्ता से ज्यादा महत्वपूर्ण जनसेवा है।

अनछुआ पहलू: शिबू सोरेन ने अपने परिवार को कभी भी राजनीति में प्रमुखता नहीं लेने दी। उनके बड़े बेटे, दुर्गा सोरेन, की मृत्यु (2009) ने उन्हें गहरा आघात पहुँचाया, लेकिन उन्होंने इस दुख को सार्वजनिक रूप से कभी व्यक्त नहीं किया। उनके करीबी बताते हैं कि वे अक्सर रात में अकेले बैठकर अपने बेटे की तस्वीर देखते और चुपके से आँसू बहाते थे। यह उनकी निजी जिंदगी का वह पहलू था, जो जनता से हमेशा छिपा रहा।

विवादों का सामना और अटल विश्वास- शिबू सोरेन का जीवन विवादों से मुक्त नहीं रहा। 2004 में चिरूडीह कांड और अन्य आरोपों ने उनकी छवि को प्रभावित किया। उन्हें केंद्रीय कोयला मंत्री के पद से इस्तीफा देना पड़ा, और कई बार कानूनी लड़ाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन उनके समर्थकों का मानना था कि ये आरोप उनकी लोकप्रियता को कम करने की साजिश थे। इन तमाम चुनौतियों के बावजूद, शिबू सोरेन ने कभी अपने लक्ष्य से समझौता नहीं किया।

अनछुआ पहलू: विवादों के दौरान शिबू सोरेन ने एक डायरी लिखी, जिसमें उन्होंने अपने विचार और दुख व्यक्त किए। इस डायरी में उन्होंने लिखा, "सच्चाई का रास्ता कठिन होता है, लेकिन वह हमेशा जीतता है।" यह डायरी उनके परिवार के पास सुरक्षित है और उनके निजी विचारों का एक अनमोल दस्तावेज है।

अंतिम दिन और शोक की लहर- 2025 में शिबू सोरेन की तबीयत बिगड़ने की खबरों ने उनके समर्थकों को चिंतित कर दिया। फरवरी में सांस की तकलीफ और जून में किडनी की गंभीर समस्या के कारण उन्हें दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में भर्ती किया गया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार, और कई नेताओं ने उनका हालचाल लिया। उनकी (मृत्यु) ने पूरे देश में शोक की लहर दौड़ा दी।

अमर विरासत- शिबू सोरेन केवल एक व्यक्ति नहीं, एक विचारधारा थे। उनके बेटे हेमंत सोरेन ने कहा, "गुरुजी ने हमें सिखाया कि सच्चाई और संघर्ष ही जीत का रास्ता है।" झारखंड मुक्ति मोर्चा और अलग झारखंड राज्य उनकी सबसे बड़ी देन हैं। उनकी मृत्यु ने लाखों लोगों को उनकी विरासत को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी है।

अनछुआ पहलू: शिबू सोरेन पर्यावरण संरक्षण के भी प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अपने गाँव में सैकड़ों पेड़ लगवाए और आदिवासियों को जंगल संरक्षण के लिए प्रेरित किया। वे कहते थे, "जंगल हमारी माँ है, इसे बचाना हमारा धर्म है।" उनकी यह सोच आज के पर्यावरण संकट के दौर में और भी प्रासंगिक है।

निष्कर्ष: एक प्रेरणा, एक युग- शिबू सोरेन का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो अपने लोगों के लिए जीए। उनकी सादगी, संवेदनशीलता, और संघर्ष की कहानी हर उस व्यक्ति को प्रेरित करती है, जो सामाजिक न्याय और समानता के लिए लड़ना चाहता है। दिशोम गुरु की मृत्यु एक युग का अंत है, लेकिन उनकी शिक्षाएँ और उनका बलिदान हमेशा जीवित रहेंगे।

श्रद्धांजलि: दिशोम गुरु, आपकी आत्मा को शांति मिले। झारखंड की मिट्टी और झारखंडी समाज आपको हमेशा याद रखेंगे।

विजय शंकर नायक
केन्द्रीय उपाध्यक्ष
आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच

11 फीट ऊंचे शिवलिंग का रुद्राभिषेक

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (पीरपैंती): प्रखण्ड के हीरानंद कुँवरवासा स्थित बगीचा में विगत नौ दिनों से चल रहे हरिनाम कीर्तन के अवसर पर श्रावन सोमवार को 11 फीट ऊंचे भगवान पार्थिवेश्वर शिवलिंग का रुद्राभिषेक किया गया। इस दौरान 11 फीट के भगवान शिव के विशाल शिवलिंग का रूद्राभिषेक वैदिक ब्राह्मणों के द्वारा विधिवत करवाया गया। वहीं त्यागी जी महाराज ने बताया की हरि नाम कीर्तन के पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में भगवान शिव की 11 फीट ऊंची शिवलिंग पर उत्तरवाहिनी गंगा के जल से अभिषेक व विशाल भंडारे का आयोजन किया गया है। मौके पर पंडित कृष्ण कुमार ओझा, जनसुराज के संभवित प्रत्याशी घनश्याम दास, समाजसेवी भूलन दुबे, अनिल कुंवर सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

अनियंत्रित हो बस पलटी बाल- बाल बचे यात्री

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (पीरपैंती): बाराहाट मुख्य मार्ग पर धर्मपुर मोड़ के निकट अनियंत्रित होकर एक यात्री बस पलट गई। प्राप्त सूचना के अनुसार स्टाफ सहित करीब 10 लोग सवार थे। इसमें से चार-पांच लोग मामूली रूप से चोटिल हो गये। विनोद कुमार रजक के परिवार से तीन लोग हल्के-फुल्के घायल हो गए जिसमें की नीतू कुमारी, अंशु कुमारी और अंशु कुमार थे।शुरुआती तौर पर ड्राइवर ने बताया कि तकनीकी दिक्कत के कारण बस की स्टेरिंग लॉक हो गई। तत्काल सूचना पर पीरपैंती पुलिस मौके पर पहुंची स्थानीय लोगों व पुलिस के सहयोग से लोगों को रेफरल अस्पताल इलाज हेतु लाया गया। जहां ड्यूटी में तैनात चिकित्सकों के द्वारा घायलों का प्राथमिक उपचार किया गया। उपचार उपरांत सभी को छुट्टी दे दी गई। प्रत्यक्ष दर्शियों ने बताया कि भगवान भोलेनाथ ने कृपा से बड़ा हादसा होते होते टल गया।

विधायक ने धनकुंड नाथ मंदिर पहुंचकर की मत्था टेकी

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (कहलगांव): पवित्रतम श्रावण मास के अंतिम सोमवारी के अवसर पर कहलगांव विधायक पवन कुमार यादव अपने सहयोगियों के साथ अति प्राचीन धनकुंड नाथ शिव मंदिर पहुंचकर माथा टेका और उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए धनकुंड नाथ के महिमा का गुणगान किया। उन्होंने कहा कि बाबा ने उन्हें सावन के अंतिम सोमवारी पर विशेष कृपा कर बुलाया है और बाबा का आशीर्वाद उन्हें हमेशा मिलता है। विधायक ने मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए 151 बोरा सीमेंट देने की घोषणा की, जिससे मंदिर की भव्यता और बढ़े। स्थानीय लोगों ने विधायक के व्यवहार एवं सहृदयता की भूरी भूरी प्रशंसा की।

BHOLA ELECTRICAL
G.T.ROAD NEAMATPUR, AASANSOL WEST BENGAL–713359
ALL KIND OF ELECTRICAL JOB : CONTACT : 9064588166
SALES, SERVICE & CCTV CAMRA INSTALLATION,
HOUSE WIRING, MOTER & FAN WINDING

समरथ गुरु कपड़ा रूपी शिष्य के मन, बुद्धि, चित्त और अंतःकरण को साफ करने वाले धोबी होते हैं- बाबा उमाकान्त जी महाराज

कर्मों को साफ करने के लिए ही सन्तों ने आदेश दिया कि सेवा करो, सेवा से कर्म कटेंगे।

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (अहमदाबाद): गुजरात बाबा उमाकान्त जी महाराज ने 02 अगस्त 2025 के सतसंग में बताया कि कर्मों की सफाई कैसे होती है और कर्मों की सफाई करता कौन है? इसके बारे में बताते हुए बाबाजी ने कहा कि जैसे कोई चीज गंदी हो गई; फर्श गंदा हो गया, बर्तन गंदा हो गया, तो वह एक बार की धुलाई में नहीं साफ होता है, बार-बार साफ करना पड़ता है। कपड़े पर दाग लग गया तो दाग एक बार में नहीं छूटता है। बार-बार छुड़ाना पड़ता है और अगर हाथ से भी नहीं छूटता है तो साबुन लगाना पड़ता है, साबुन लगा करके रगड़ करके साफ करना पड़ता है। ऐसे ही, कहा गया -

"गुरु धोबी शिष्य कापड़ा, साबुन सिरजनहार।
सुरत शीला पर धोयिए, निकसे रंग अपार।"

बहुत पहले, गुरु महाराज कहा करते थे कि मैं जाति का धोबी नहीं हूं। कपड़ा धोने वाला धोबी नहीं हूं। मैं मन, चित्त, बुद्धि अंतःकरण का धोने वाला धोबी हूं। मैं मन की सफाई करता हूं, बुद्धि की सफाई करता हूं, बुद्धि सही रखता हूं, अंतःकरण की सफाई करता हूं।

गुरु जो होते हैं, वे अंतःकरण को साफ करते हैं क्योंकि अंतःकरण बहुत गंदा है, कई जन्मों का कर्म जमा है। अब यह कर्म कैसे धुलेगा? जब साधना करेंगे, जब हम साधना शिविर लगवाएंगे और उसमें बैठेंगे तब धुलेगा, तब साफ होगा।

निचोड़ने में भी तकलीफ होती है लेकिन यह सब गुरु की दया समझनी चाहिए

साधना में बैठने में शुरू में तो तकलीफ होती है। क्या तकलीफ होती है ? मन नहीं कहता बैठने को। थोड़ी देर बैठो वैसे ही मन कहता है उठ जाओ। तो काल और माया क्या करती है ? पैर में दर्द, कमर में दर्द, ये, वो, तरह-तरह कि तकलीफें। लेकिन अब समय की सीमा में बंध गए कि 2 घंटा बैठना है। तो तकलीफ तो होगी ही होगी।

जैसे बताया कि कपड़ा गंदा हो जाता है तो उसकी धुलाई होती है। तो धोबी कपड़े को साफ करने के लिए क्या करता है? पटक-पटक करके धोता है। पानी में भिगोता है और पाटे पर पटक करके धोता है और निचोड़ता है। तो निचोड़ने में भी तकलीफ होती है। निचोड़ने में क्या निकलता है? गन्दगी निकलती है।

जितने भी सन्त हुए, सबने आदेश दिया कि सेवा करो। सेवा से कर्म कटेंगे। क्योंकि सेवा में पसीना बहता है और ऐसे ही गन्दगी निकलती है। तो निचोड़ने में भी तकलीफ होती है लेकिन यह सब गुरु की दया समझनी चाहिए।

साहित्य सनातन सम्मेलन हरिद्वार, 'अविरल साहित्य, सनातन की भक्ति धारा का प्रवाह'

"सनातन भारत की आत्मा है- फायर ब्रांड हिन्दूवादी नेत्री साध्वी डा. प्राची

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (हरिद्वार): सनातनी सिद्धांतों पर केन्द्रीत दो दिवसीय साहित्य-सनातन सम्मेलन, हरिद्वार 2025 कुशलतापूर्वक संपन्न हुआ। हरिद्वार में भूपतवाला स्थित महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट में आयोजित साहित्य सनातन सम्मेलन हरिद्वार 2025 में देश भर से आए 350 से अधिक कवियों, लेखकों, साहित्यकारों, संतो,शिक्षकों, अधिवक्ताओं, एवं बुद्धिजीवियो ने प्रतिभाग लिया।

आयोजन की अध्यक्षता करते हुए शिवयोगी धाम हरिद्वार के परमाध्यक्ष आचार्य शिवयोगी जी महाराज ने कहा कि साहित्य में सनातन का समावेश नितांत आवश्यक है। संयम, साधना और अनुशासन का पालन करके ही समृद्ध साहित्य का सृजन संभव है। आयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुई फायर ब्रांड हिन्दूवादी नेत्री साध्वी डा प्राची जी ने कहा कि सनातन भारत की आत्मा है। साहित्यकारों का परम कर्तव्य है की वे अपनी कलम के माध्यम से सनातनी सिद्धांतों की रक्षा करें।

महामंडलेश्वर ललितानंद गिरी जी महाराज ने कहा कि लेखकों और कवियों पर समाज और राष्ट्र की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। क़लमकार अपनी कलम के माध्यम से समाज और राष्ट्र में एक बड़ा परिवर्तन ला सकते है। नेशनल बुक ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार डाक्टर बलदेव भाई शर्मा जी ने कहा की हिन्दी केवल एक भाषा ही नही बल्कि भावना है। हिन्दी पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने की शक्ति रखती है। वैभव शर्मा फाउंडेशन (रजि•) के तत्वावधान में आयोजित साहित्य सनातन सम्मेलन हरिद्वार 2025 के अंतर्गत संत सम्मेलन, कवि सम्मेलन, पुस्तक विमोचन, सम्मान समारोह, भजन संध्या, महारुद्राभिषेक, फूलों की होली आदि कार्यक्रमो का आयोजन किया गया।

सम्मेलन के दूसरे दिन नंदगाँव से पधारी सुप्रसिद्ध भजन गायिका देवी लुभानी बृजवासी जी के भजनों ने श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। साहित्य सनातन सम्मेलन हरिद्वार 2025 का मंच संचालन वैभव शर्मा फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय कवि वैभव शर्मा ने किया। साहित्य सनातन सम्मेलन हरिद्वार 2025 में मुख्य रुप से राज कौशिक, अजय बृजवासी, डाक्टर अनिल वाजपेयी, यथार्थ शर्मा, मधुकर त्यागी, सुबोध त्यागी, अभिषेक शर्मा, रंगनाथ अग्रवाल, लोकेश चौधरी, रेनू बंसल, प्रदीप बंसल, दीपा सिरोही, दर्शन अग्रवाल, महेश गोयल, आशीष जैन, संजय त्यागी, संजय जैन सत्यम, मंजू अग्रवाल, धन्वी अग्रवाल, रोहिणी सेठ, सुनीता छाबड़ा, मधुरबाला, अनीता श्रीवास्तव, अपर्णा भटनागर, हेमंत भटनागर, शालिनी शर्मा, अंकित त्यागी, भावना त्यागी, भावना अरोड़ा 'मिलन', अलका शर्मा आदि उपस्थित रहे।

वैभव शर्मा फाउंडेशन के माध्यम से अनेकानेक साहित्यकारों व भाषाविदों का सानिध्य नवांकुर कवियों को मिला और उन्हें वहां पर अपनी अभिव्यक्ति का मौका मिला। कार्यक्रम की शुभ शुरुआत एक धार्मिक अनुष्ठान की तरह महान सनातनी प्रतिभाओं के वक्तव्य से हुई। हरिद्वार जैसे धार्मिक स्थल और माँ गंगा के तट पर हुए इस महान आयोजन में सनातनी विभूतियों के कर कमलों द्वारा देश की राजधानी दिल्ली से पधारी आशु कवयित्री श्रीमती भावना अरोड़ा 'मिलन' की पुस्तक 'हरि गुणगान' का विमोचन हुआ। महामंडलेश्वर ललितानंद गिरी जी महाराज की आज्ञा पाकर कवयित्री भावना 'मिलन' ने अपनी पुस्तक से एक भजन 'ओम नाम में समाया यह व्योम है' कि चंद पंक्तियों को भोलेनाथ के चरणों में समर्पित किया।

गाजियाबाद वसुंधरा से पधारी कवयित्री दिपुलिका शर्मा जी की पुस्तक उम्मीदों का सफर एवं देहरादून से पधारी कवयित्री सिद्धि जी की पुस्तक का भी विमोचन हुआ। अन्य और भी कवियों की पुस्तकों का विमोचन संपन्न हुआ। मंगल कामना.सहित सभी को सनातनी विभूतियों का आशीर्वचन प्राप्त हुआ वैभव शर्मा. फाउंडेशन ने सनातनी परंपरा को साहित्य के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने एवं प्रचार-प्रसार में अधिकतम योगदान देने.में एक.अत्यंत सराहनीय कदम बढ़ाया है. संस्था ने अपने अंतिम उद्घोष में साहित्यकारों को यह आश्वासन दिया कि भविष्य में इस तरह से देवभूमि को माध्यम बनाकर अनेकानेक कार्यक्रम, अधिवेशन किए जाते रहेंगे जो हमारे सनातन एवं देश के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत कारगर सिद्ध होंगे।

संजीवनी गंगा के क्विज प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाया प्रतिभा

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (पीरपैंती): प्रखंड के पीरपैंती बाजार स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में स्वयंसेवी संस्था संजीवनी गंगा के द्वारा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कुल चौबीस विद्यार्थी सम्मिलित हुए। कक्षा तीन से स्वेच्छा कुमारी प्रथम,अनुप्रिया द्वितीय, सिद्धि कुमारी तृतीय, कक्षा चार से प्रथम रणवीर कुमार,द्वितीय अंश कुमार, तृतीय सृष्टि कुमारी और कक्षा पांच से प्रथम पार्वती कुमारी, द्वितीय आयशा कुमारी, तृतीय मोनिका कुमारी के प्रदर्शन को देखते हुए उनको मेडल देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य रघुनंदन पंडित ने कहा

विद्यार्थी देश के भविष्य होते हैं। विद्यार्थी को शिक्षा के साथ साथ अलग अलग तरह के आयोजनों में हिस्सा लेना चाहिए। इससे उनकी बौद्धिक क्षमता का विकास होता है। संस्था के प्रखण्ड संयोजक मो0 साजिद उर्फ लाल ने कहा कि इस तरह के आयोजनों से विद्यार्थियों में एक नए तरह की खुशी और उमंग जागृत होती है। बच्चों के जन्म दिन पर पौधारोपण करना इस विद्यालय को औरों से अलग बनाता है। संस्था के संस्थापक सचिव मो0 अयाज ने बताया कि संस्था एक लाख से अधिक बच्चों का बौद्धिक विकास कर चुकी है। इसके साथ ही संस्था डिजिटल लिटरेसी प्रोग्राम के माध्यम से बच्चों और बुजुर्गों को भी डिजिटलाइज्ड करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक शिवनंदन यादव, मुकेश कुमार, लखन कुमार, राजीव नंदन, शिक्षिका, पूनम कुमारी, सुमन कुमारी उपस्थित थे। मंच संचालन संस्था के धर्मेंद्र कुमार ने किया।

जीवन वास्तव में एक अनुपम और अनमोल उपहार

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (मध्य प्रदेश): जीवन वास्तव में एक अनुपम और अनमोल उपहार है।एक ऐसी यात्रा, जिसमें हर मोड़ नया अनुभव, सीख और संभावनाओं की झलक लिए होता है। कई बार परिस्थितियाँ कठिन होती हैं, राहें धुंधली प्रतीत होती हैं, लेकिन सच्ची उपलब्धि इसी में है कि हम उन पलों में भी जीवन की सुंदरता को देखना सीखें और सीखते रहें।

जीवन के अनुभव,हमारे सच्चे मार्गदर्शक हर व्यक्ति के जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। कभी खुशी, तो कभी दुख—ये दोनों ही अनुभव हमें भीतर से मजबूत बनाते हैं। कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए; बल्कि इनसे मिलने वाली सीख को अपने जीवन में सहेजना चाहिए। जब भी जीवन में संकट या चुनौती सामने आए, याद रखें कि यही अनुभव हमारे व्यक्तित्व को नई परिभाषा देते हैं।

वास्तविक बुद्धिमत्ता तो इसी में है कि हम सिर्फ कठिन समय में ही नहीं, बल्कि अच्छे समय में भी अपने अनुभवों की समीक्षा करें और उनसे मिले सबक को हमेशा याद रखें। इससे हम आत्ममंथन कर पाते हैं और आने वाले कल के लिए खुद को आते हैं।

जीवन को अर्थपूर्ण बनाना,हमारे हाथ में जीवन का सौंदर्य इसी में है कि हम हर क्षण को पूरी तन्मयता से जिएँ। छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लें, अपनों की खुशी में खुश हों, और दूसरों के लिए भी सहारा बनें। जब हम दूसरों की खुशियों का कारण बनते हैं, तब जीवन वास्तव में महकने लगता है।

अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहना, निरंतर सीखते रहना और आत्मविश्वास बनाए रखना—यही सफलता की कुंजी है। याद रखें, हमें हर परिस्थिति में उम्मीद और सकारात्मकता बनाए रखनी चाहिए; क्योंकि अच्छा समय और सफलता उन्हीं के हिस्से में आती है, जो चुनौतियों से हार न मानें।

जीवन की असली सुंदरता उसकी विविधता, अनुभव और उससे मिलने वाली सीख में छुपी है। जो व्यक्ति इन बातों को समझ लेता है, उसके लिए जीवन सिर्फ एक यात्रा नहीं, बल्कि एक प्रेरणा बन जाती है। इसलिए, जीवन से प्रेम करें, सीखते रहें, बढ़ते रहें,यही जीवन को सुंदर और अर्थपूर्ण बनाता है।

"जो जीवन को समझ गया, वही जीवन को जी पाया।"

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज, हरदा (मध्य प्रदेश)

जय हिन्द, जय हिन्द की सेना

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: यह देश के लिए, पहलगाम हमले में मारे गए 26 पर्यटकों के परिवार वालों के लिए एक खुशी एवं गर्व की बात है कि हमारी सेना ने आज आपरेशन महादेव के जरिए उन दहशतगर्दो को मार गिराया गया है जिन्होंने पहलगाम की वारदात की थी। मारे गए आतंकी लश्कर ए तैयबा यानी टीआरएफ के थे जिनके नाम सुलेमान, जिब्रान तथा हमजा थे। अतः बेहद खुशी है कि हमारी सेना ने आखिर उन आतंकियों को मार गिराया है। जिन्होंने उन बेगुनाह पर्यटकों मारा था, कह सकते हैं कि ये एक सच्ची श्रद्धांजलि है। पहलगाम में मारे गए पर्यटकों के लिए। काफी समय से हमारा विपक्ष चीख-चीख कर इन हमलावरों के बारे में सरकार से यही पूछ रहा था कि आखिर पहलगाम के हत्यारे कहा है। यहां तक कि आपरेशन सिंदूर पर संसद में हो रही बहस में भी हमारा विपक्ष इन हत्यारों के बारे में अपने प्रश्न सरकार से लगातार पूछ रहा है। अतः आशा की जाना चाहिए कि अब सबको सरकार एवं सेना के पराक्रम के बारे में मालूम पड़ हि गया होगा। अतः यहां हम हमारी सेना के बारे में केवल यही दो शब्द कहना चाहते है। जय हिन्द,जय हिन्द की सेना।

मनमोहन राजावत "राज"
नई सड़क, शाजापुर

मानवता तार-तार

कानून के पन्नों में लिखा है,
हर अपराध की सजा।
फिर भी होते जघन्य अपराध,
अपराधी घूमते हैं हजार।।

अरे क्यों जलाते हो पुतले,
जलाओ उन्हें जो लूटते हैं।
बहन-बेटियों की अस्मत,
करते अभद्र व्यवहार।।

क्या यही है सभ्य समाज,
जो कद्र ना करे स्त्रियों की।
हँसते बच जाते हैं दोषी,
जो करते नित अत्याचार।।

डर नहीं इन्हें ईश का,
ढोंगी साधू बनके फिरते।
धूत रहते नशे में हरदम,
लाँघ जाते मर्यादा पार।।

सुरक्षित नहीं हैं बेटियाँ,
घटती निर्भया जैसी काण्ड।
गिद्ध की तरह नजर गड़ाए,
करने को आतुर व्यभिचार।।

लज्जा कहाँ उन दरिंदो को,
जो पशुओं से भी बत्तर हैं।
काम वासना में लिप्त रहते,
करते मानवता तार-तार।।

मुकेश उइके "मयारू"
कोरबा (छ.ग.)
कोलफील्ड मिरर

सर्वश्रेष्ठता

चल उतर कर देख एक बार
सीवर में,या फिर गंदे नाले में,
फिर कितने दिन पी पाओगे
चाय स्वच्छ प्याले में,
लेकर स्वच्छ हाथ,
तब सोच पाओगे कितना मुश्किल है
बनना,रहना बनकर छोटी जात,
बिना शारिरिक श्रम,
पाया हुआ मुफ्त का धन,
मजे और धनवीर बन कर
खुद को कहना सर्वोच्च,
कर नहीं पा रहे हो उच्चता का उन्मोच्य,
कभी कर के दिखा दो
खेतों में पूरा दिन भर परिश्रम,
फिर न कहना कि टूट गया तन-मन,
छोड़कर मिथ्यात्मक कहानियां सुनाना,
कितना कठिन है चमड़े से नए जूते
बनाना,
परलोक ले जाने का तरीका
खुलकर बताओ वैज्ञानिकों को,
यदि सचमुच में वजूद उन स्थानों का,
तो खोज लेंगे वे उन स्थानों को,
जैसे ढूंढ ले रहे हैं खरबों मील दूर
रहने वाले नायाब ग्रह,
वे साबित भी करते हैं और नहीं भरमाते
आपकी तरह झूठ को सच कह कह,
आओ श्रीमान एक बार ही सही
झूठ मूठ नाले में उतरकर दिखाओ,
और अपनी जन्मजात श्रेष्ठता को
सबके सामने साबित कर दिखाओ।

राजेन्द्र लाहिरी
पामगढ़ छग
कोलफील्ड मिरर

अन्नदाता

जब खेतों में हरी-भरी फसलें लहलहाती है
देख कृषक के मन में, खुशियाँ आ जाती है।

अपने श्रम को वह, सार्थक समझ जाता है
जब पसीनों की बूंदें बालियों में लहराती है।

कड़ी मेहनत जीवन भर हरदम ही करता है
अन्न उगाता है, तभी अन्नदाता कहलाता है।

ठंडी,गर्मी,बारिश की मार हरदम झेलता है
अन्नधान से परिपूर्ण वह खुश हो जाता है।

मिट्टी ही सब कुछ है, उसकी पूजा करता है
तन-मन को सर्वस्व इसमें समर्पित करता है।

दिवसावसान तक जब वह हल चलाता है
तब खेतों के श्रम का, उचित फल पाता है।

फल की लालसा में, पसीना खूब बहाता है
इसी पसीने की बूंदों से सोना उगा जाता है।

जगत का भला वह, अपना पोषण करता है
अन्न से इस जगत का, कल्याण हो जाता है।

अशोक पटेल "आशु"
तुस्मा, शिवरीनारायण (छग)
कोलफील्ड मिरर

कितने करोड़ का सवाल है

(शेर)- भरी महफ़िल में हमसे कहते हैं
कि, ऊपर वाले से डरो।
हम भी तो यही कहते हैं कि, कुछ तो शर्म
तुम भी करो।।
क्यों है आपकी सेटिंग, कहीं कमीशन तो
कहीं सुंदरी से।
अपने इस नकली चोले से, मत भगवान
को बदनाम करो।।

हर गली-शहर-गाँव, मचा यही बवाल है।
बोलो, बोलो, बोलो, कितने करोड़ का
सवाल है।।
एक करोड़, दो करोड़, सात करोड़ या
कई करोड़।
हर गली-शहर-गाँव-----।।

मेरी हस्ती पे सवाल, इतने क्यों उठाते हो।
कैसे हुए हो करोड़पति, क्यों नहीं बताते
हो।।
झौपड़ी को महल कैसे, आपने बना
दिया।
हर तरफ है चर्चा, आप कैसे मालामाल
है।।
हर गली-शहर-गाँव-----।।

महंगाई-बेरोजगारी से, यह वतन त्रस्त है।
कमीशन के लालच में, हर विभाग भ्रष्ट
है।।
अन्याय- नाइंसाफी से, मर रहा बेकसूर
है।
दबंगों और लूटेरों का, क्यों मकड़जाल
है।।
हर गली-शहर-गाँव-----।।

बेईमान-चरित्रहीन, हमें नैतिकता सिखाते
हैं।
अपने पापों का सबूत, चालाकी से मिटाते
हैं।।
संगीन जुर्म और खून से, जिनके हाथ
रंगीन है।
साम्राज्य और सम्मान उनका, ऐसे क्यों
विशाल है।।
हर गली-शहर-गाँव-----।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आज़ाद
बारां (राजस्थान)
कोलफील्ड मिरर

कलम की खनक फाउंडेशन द्वारा मनावर जिला धार मप्र के संजय वर्मा दृष्टि उत्कृष्ट सम्मान से सम्मानित

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: कलम की खनक फाउंडेशन (पंजी) साहित्य, संस्कृति, कला द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में चित्र आधारित प्रतियोगिता में"बीत रहा है सावन प्रिय के द्वारा उत्कृष्ट सृजन पर मंच की डॉ.कनक लता जैन संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष योग चिकित्सक एवं आंतरिक अभियंता द्वारा दिनांक 30-7-2025 को संजय वर्मा "दृष्टि" को ई प्रशस्ति पत्र उत्कृष्ट रचनाकार सम्मान से विभूषित कर मंच उनके उज्वल साहित्यिक भविष्य की कामना करता है। उल्लेखनीय है कि संजय वर्मा "दृष्टि" की देश विदेश की पत्र पत्रिकाओं में निरन्तर 51 से अधिक वर्ष से प्रकाशित होती रही है। अबतक 791 सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। इनका नाम वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकार्ड में तीन बार अलग-अलग विधा में दर्ज है| गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड, स्टार बुक से भी सम्मानित है।

चाय की टपरी: भारत का अनौपचारिक संसद भवन

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: चाय की टपरी—वह पवित्र स्थल, जहाँ सुबह की पहली किरण के साथ देश की समस्याएँ हल होने लगती हैं और शाम ढलते-ढलते दुनिया की सैर हो जाती है। यह न कोई कैफे है, न कोई फाइव-स्टार लाउंज, बल्कि भारत का वो अनौपचारिक मंच है, जहाँ हर कोई अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, और क्रिकेट विशेषज्ञ बन जाता है।

सबसे पहले बात उस टपरी वाले भैया की, जो इस छोटे से साम्राज्य का बादशाह होता है। स्टोव पर चाय की केतली, एक तरफ बिस्किट की डिब्बी, और दूसरी तरफ रेडियो या मोबाइल पर भक्ति गीत—यह उसका सिंहासन है। चाय बनाते वक्त उसकी चाल ऐसी होती है, जैसे वो कोई जादूगर हो, जो एक कप चाय में सारी दुनिया की थकान गायब कर दे। "भैया, एक कड़क चाय देना!"—यह आदेश सुनते ही वो ऐसे चाय छानता है, जैसे कोई ऑर्केस्ट्रा कंडक्टर सिम्फनी चला रहा हो।

टपरी पर जमा होने वाला जमावड़ा भी कमाल का है। सुबह-सुबह ऑफिस जाने वाले, रिक्शा-टैक्सी वाले, और वो अंकल जी, जो अखबार लिए हर खबर पर अपनी राय ठोकने को तैयार रहते हैं। यहाँ बातचीत का दायरा इतना बड़ा है कि एक घंटे में आप क्रिकेट से लेकर करप्शन, और पड़ोस की भाभी की नई साड़ी तक की चर्चा सुन सकते हैं। "अरे, सुना? पेट्रोल फिर महँगा हो गया!"—एक ने मुद्दा उठाया, और बस, टपरी संसद का सत्र शुरू। कोई बोलेगा, "सरकार को चाहिए कि..." और कोई तुरंत टोक देगा, "अरे, सब बेकार है, ये तो विदेशी साजिश है!" चाय की चुस्की के साथ हर कोई विशेषज्ञ बन जाता है।

यहाँ गपशप का मसाला भी कम नहीं। अगर कोई नया चेहरा टपरी पर दिखा, तो उसकी पूरी कुंडली पलक झपकते तैयार हो जाती है। "ये नया लड़का जो आया है न, सुनने में आया है कि वो IT में है, पर गाड़ी तो पुरानी स्कूटी चलाता है!" और अगर कोई टपरी पर ज्यादा देर बैठ गया, तो भैया की भवें तन जाती हैं, "अबे, चाय पी और चल, ये कोई लाइब्रेरी नहीं है!"

खाने का मेन्यू भी बड़ा निराला है। बिस्किट, बन, और कभी-कभी समोसा या वड़ा। लेकिन असली मजा तो तब आता है, जब कोई ग्राहक "भैया, चाय में अदरक डालना" कहता है, और दूसरा चिल्लाता है, "अरे, मेरी तो बिना चीनी की!" टपरी वाला बिना पलक झपकाए सबकी डिमांड पूरी करता है, जैसे वो कोई जादू का पिटारा हो।

और हाँ, टपरी की सबसे बड़ी खासियत है उसकी क्रेडिट पॉलिसी। "भैया, हिसाब बाद में कर लेंगे!"—ये वाक्य टपरी की आत्मा है। लेकिन बेचारा टपरी वाला, जो हर महीने हिसाब माँगते वक्त ऐसे शर्माता है, जैसे अपनी सास से उधार माँग रहा हो। फिर भी, वो मुस्कुराते हुए कहता है, "कोई बात नहीं, साहब, अगली बार दे देना।"

चाय की टपरी सिर्फ एक दुकान नहीं, भारत का एक मिनी थिएटर है, जहाँ हर दिन नया ड्रामा, नया किरदार, और नई कहानी तैयार होती है। यहाँ न कोई डिग्री चाहिए, न कोई स्टेटस। बस एक कप चाय और थोड़ा समय—फिर चाहे दुनिया बदलनी हो, या बस चाय की चुस्की के साथ वक्त काटना हो। तो अगली बार जब आप टपरी पर जाएँ, तो चाय के साथ-साथ उस अनकहे ड्रामे का भी लुत्फ उठाइएगा। आखिर, यही तो है असली भारत की आत्मा!

मुकेश कुमार बिस्सा
जैसलमेर

मेरे संघर्ष की कहानी

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: गुरुजनों की शिक्षा, परिवार का प्रेम और साथ, जीवन यात्रा में जब संघर्षों की बात आती है, तो गुरुजन और परिवार का साथ वह अनमोल धरोहर बन जाता है, जिसकी छाया में हर चुनौती आसान लगती है। मेरे जीवन के हर मोड़ पर — स्कूल, कॉलेज, या नौकरी जहां कहीं भी कठिनाइयाँ आईं, वहां मेरे गुरुजनों की शिक्षाएँ और अपनों का साथ मेरी शक्ति बनी रही। गुरुजन का मार्दर्शन, प्रेरणा की अखंड ज्योति मेरे शिक्षक और मार्गदर्शक, "सह पाठी" और अन्य गुरुजन, मेरे जीवन के पथ-प्रदर्शक रहे हैं। उनकी दी हुई शिक्षाएँ आज भी मेरी स्मृतियों में उतनी ही ताजा हैं। उन्होंने सिर्फ किताबों की बात नहीं सिखाई, बल्कि जीवन के मूल्य: दृढ़ निश्चय, ईमानदारी और मानवता का पाठ पढ़ाया। कठिन परिस्थितियों में जब कभी मैं डगमगाया, तो उनके शब्द मुझे फिर से संभाल गए। वह अनुशासन, श्रम और आत्म-विश्वास जो उन्होंने मेरे भीतर बोया, आज भी हर उपलब्धि की नींव है। माँ-पिता का प्यार, अटूट सहारा मेरे माता-पिता का बिना शर्त स्नेह और विश्वास सबसे बड़ा सहारा रहे। आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के बावजूद उनका समर्पण और सकारात्मक दृष्टिकोण मेरी ऊर्जा बने। जब कभी मैं असफल हुआ या थक गया, तो माँ के प्यारभरे शब्द और पिता की सलाह ने मुझे फिर से आगे बढ़ने का साहस दिया। भाई-बहनों का साथ,साझेदारी का अद्भुत संबंध, परिवार के हर सदस्य का स्नेह, भाई-बहनों के साथ बिताया बचपन, साझा संघर्ष, ये यादें मेरी आत्मा में रच-बस गई हैं। कभी छोटे-छोटे झगड़े, तो कभी एक-दूसरे के लिए सपनों का साथ बन जाना, उन पलों को भुलाया नहीं जा सकता। हम सबने साझा जीवन-संघर्ष से बहुत कुछ सीखा, मिलजुलकर हर कठिनाई को पार किया। जीवन की सच्ची विरासत, आज जब भी अतीत के पन्ने पलटता हूँ, तो महसूस करता हूँ, गुरुजनों की शिक्षा, परिवार का प्रेम और साथ, यही मेरी असली दौलत हैं। संघर्षों की राह में यह धरोहर मेरी ताकत बनी, मेरी सोच को दिशा दी और हर मुश्किल में उम्मीद की किरण बनी। परिवार और गुरुजनों से मिली सीख और प्रेम के बिना मंज़िल अधूरी है। जीवन की सबसे गहरी जड़ें वहीं हैं, और यही मेरी सबसे अनमोल विरासत है। मेरी कामयाबी के हर कदम के पीछे, इन सभी की प्रेरणा, आशीर्वाद और साथ सदा मौजूद है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता, बल्कि हृदय में हमेशा अमिट बना रहेगा।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज हरदा मध्य प्रदेश

सरकार के दो मुख्य स्तंभों का मानसून सत्र में राष्ट्रपति से मिलना कोई बड़ा फैसला, बड़ा बिल, जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा या फिर उपराष्ट्रपति चुनाव का मामला?

पीएम व केंद्रीय गृहमंत्री अचानक राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात की- राजनीतिक गलियारों में सियासी अटकलें चरम पर पहुंची!

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त (गोंदिया): वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ की नजरें भारत की हर गतिविधियों पर लगी रहती है वैसे भी अभी 21 जुलाई से 21 अगस्त तक मानसून सत्र चल रहा है तो निगाहें और भी पैनी हो जाती है कि, संसद किस तरह के बड़े फैसले लेता है,या फिर ऑपरेशन सिंदूर पर 32 घंटों की बहस के बाद अब फ़िर एसआई आर पर संसद में हंगामें केकारण कामकाज ठप्प पड़ा है,ऊपर से उपराष्ट्रपति का चुनाव 9 सितंबर 2025 को होने की घोषणा हो चुकी है सांसद में बड़े-बड़े बिल पेंडिंग है, इस बीच भारत सरकार व पार्टी के दो मुख्य पावरफुल सर्वोच्च दिग्गजों का अचानक रविवार 3 अगस्त 2025 को राष्ट्रपति भवन में जाकर राष्ट्रपति से मुलाकात करने की गतिविधि ने भारत ही नहीं पूरे विश्व का ध्यान खींचा है, इसीलिए मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं कि जरूर कोई अति खास महत्वपूर्ण मुद्दा होगा जो दोनों दिग्गज अलग-अलग रूप से राष्ट्रपति भवन में जाकर उनसे मुलाकात की है, जिसका खुलासा कुछ दिनों में हो जाएगा, परंतु राजनीतिक हल्कों में सियासी अटकलों का बाजार गर्म हो गया है, विपक्ष अलर्ट हो गया है कि कहीं कोई बड़ा फैसला तो नहीं लिया जा रहा है, या फिर मानसून सत्र में कोई बड़ा बिल तो पेश नहीं किया जाएगा और हंगामें के बीच ध्वनिमत से पारित कर लिया जाएगा या फिर जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की भी तैयारी या फिर उपराष्ट्रपति के नाम पर मोहर लग चुकी है इसके कयास लगाए जा रहे हैं। चूँकि सरकार के दो मुख्य स्तंभों का मानसून सत्र में राष्ट्रपति से मिलना कोई बड़ा फैसला, बड़ा बिल, जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा या फिर उपराष्ट्रपति के चुनाव का मामला हो सकता है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे पीएम गृहमंत्री नें अचानक राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात की, राजनीतिक गतिविधियों में सियासी अटकलें चरम सीमा पर पहुंची।

साथियों बात अगर हम रविवार 3 अगस्त 2025 को भारत में सियासी हलचल तेज होने की करें तो,रविवार को पीएम ने और केंद्रीय गृह मंत्री ने राष्ट्रपति से मुलाकात की। दोनों नेताओं के राष्ट्रपति से मुलाकात के बाद सियासी हलचल तेज हो गई है।हालांकि अभी तक यह सामने नहीं आया है कि पीएम और गृहमंत्री के राष्ट्रपति से मिलने के पीछे क्या कारण है। राष्ट्रपति भवन ने एक्स पर पोस्ट शेयर करते हुए लिखा-केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात क़ी सियासी दरअसल, दोनों नेताओं की राष्ट्रपति से मुलाकात के बाद अलग-अलग तरह के कयास लगाए जा रहे है।मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सरकार या तो कोई बड़ा फैसला लेने पर विचार कर रही है या फिर सदन में कोई बड़ा बिल लाना चाहती है। इसलिए दोनों नेताओं ने राष्ट्रपति से मुलाकात की है। बता दें कि संसद का मानसून सत्र चल रहा है। मानसून सत्र के पहले दिन से ही विपक्ष ऑपरेशन सिंदूर और बिहार में एसआईआर को लेकर चर्चा की मांग कर रहा है। इन दोनों मांगों को लेकर विपक्ष ने लगातार प्रदर्शन किया। विपक्ष की मांग के बाद संसद के दोनों सदनों में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा हो गई है,लेकिन एसआई आर पर अभी तक चर्चा नहीं हुई है। विपक्ष इस मुद्दे पर सदन में चर्चा चाहता है लेकिन सरकार अभी तक इसपर बिल्कुल ही तैयार नहीं है।

साथियों बात अगर हम इस मुलाकात के माइनें 9 सितंबर 2025 को होने वाले चुनाव से जोड़कर देखें तो, चुनाव आयोग ने तारीखों की घोषणा कर दी है। 9 सितंबर को मतदान होगा। वर्तमान उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 21 जुलाई को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था, जिसके कारण नए उपराष्ट्रपति का चुनाव हो रहा है। 7 अगस्त को चुनाव आयोग की तरफ से अधिसूचना जारी की जाएगी।

बता दें कि 21 जुलाई को पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया। ऐसे में फिर से उपराष्ट्रपति पद पर चुनाव होना है। यहां समझें दोनों सदनों का नंबर गेम, संसद की दोनों सदनों में सांसदों की कुल संख्या 782 है। उपराष्ट्रपति पद पर जीत दर्ज करने के लिए उम्मीदवार को 391 मतों की आवश्यकता होती है। लोकसभा में 542 सदस्यों में, एनडीए के 293 सांसद हैं। वहीं, राज्यसभा में 240 सदस्यों में से 129 सदस्य एनडीए के हैं। कुल मिलाकर एनडीए को 422 सांसदों का समर्थन प्राप्त है। ऐसे में एनडीए का उम्मीदवार ही उपराष्ट्रपति पद का दावेदार हो सकता है। फिलहाल की तरफ से उम्मीदवार की घोषणा नहीं की गई है। यहां रेखांकित करने वाली बात यह है कि पार्टी के पास इस समय उपराष्ट्रपति चुनाव में धनखड़ और नायडू जैसी स्थिति नहीं है अभी तीन पहियों पर सरकार सवार है इसलिए बाकी दो पहियों से उम्मीदवार के नाम पर सहमति लेना जरूरी हो गया है,नहीं तो नंबर गेम में बड़ा खेला होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता नंबर गेम के हिसाब से और दो पहिए अगर क्रॉस

वोटिंग कर गए गए तो हो सकता है उपराष्ट्रपति विपक्ष का हो जाए पर इसकी संभावना बहुत कम है।

साथियों बात अगर हम इस मुद्दे पर कांग्रेस नेता शशि थरूर के बयान की करें तो, जब कांग्रेस सांसद शशि थरूर से पूछा गया कि देश का अगला उपराष्ट्रपति कौन होगा? तो इसके जवाब में उन्होंने कहा कि केवल सत्तारूढ़ पार्टी का उम्मीदवार इस पद पर बैठ सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें यह मालूम नहीं है कि वह किसे उपराष्ट्रपति बनाएगी। थरूर ने कहा कि हम बस इतना जानते है कि वह जिसे उम्मीदवार बनाएगी, वह व्यक्ति ही अगला उपराष्ट्रपति होगा। यह संसद के दोनों सदनों का चुनाव है।उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति चुनाव में राज्य की विधानसभाएं भी चुनाव करती हैं, लेकिन उपराष्ट्रपति के लिए केवल लोकसभा और राज्यसभा ही मतदान करते हैं। इसलिए हम बहुमत पहले से ही जानते हैं। आगे कहा कि इतना समझ लीजिये कि अगला उपराष्ट्रपति सत्तारूढ़ दल द्वारा नामित व्यक्ति होगाउन्होंने यह भी कहा कि उन्हें उम्मीद है कि केंद्र अगले उपराष्ट्रपति को चुनने के लिए विपक्ष की भी सलाह लेगा, लेकिन कौन जाने?

साथियों बात अगर हम उपराष्ट्रपति चुनाव की प्रक्रिया व योग्यता की करें तो, उपराष्ट्रपति चुनाव प्रक्रिया और योग्यता (1) भारत का नागरिक होना चाहिए (2) कम से कम 35 वर्ष की आयु होनी चाहिए (3) राज्यसभा का सदस्य चुने जाने की योग्यता होनी चाहिए (4) उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया होती है (5) उम्मीदवार को 15,000 रूपए की जमानत राशि जमा करनी होती है (6) 1/6 वोट न मिलने पर जमानत राशि जब्त हो जाती है (7) नामांकन पत्रों की जांच के बाद वैध उम्मीदवारों की सूची तैयार की जाती है (8) मतदान प्रक्रिया में, मतदाता अपनी पसंद के अनुसार उम्मीदवारों को प्राथमिकता देते हैं (9) उदाहरण के लिए, यदि तीन उम्मीदवार A, B, और C हैं, तो मतदाता प्राथमिकता दर्शा सकता है (10) हर सांसद एक वोट देता है (11) प्राथमिकता के आधार पर उम्मीदवारों को 1, 2, 3...के क्रम में दर्शाता है (12) मतों की गिनती के बाद, उम्मीदवारों को उनकी प्राथमिकता के अनुसार मतों का आवंटन किया जाता है (13) सबसे ज्यादा मत पाने वाले उम्मीदवार को राष्ट्रपति चुनाव का विजेता घोषित किया जाता है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि पीएम व केंद्रीय गृहमंत्री अचानक राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात की- राजनीतिक गलियारों में सियासी अटकलें चरम पर पहुंची! सरकार के दो मुख्य स्तंभों का मानसून सत्र में राष्ट्रपति से मिलना कोई बड़ा फैसला, बड़ा बिल, जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा या फिर उपराष्ट्रपति चुनाव का मामला?सरकार के दो सर्वोच्च दिग्गजों का राष्ट्रपति से एक ही दिन अलग-अलग मिलना, किसी बड़े महत्वपूर्ण मुद्दे की ओर इशारा करता है।

-संकलनकर्ता लेखक-
क़र विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार
एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

धार्मिक स्थलों में हो रही भगदड़ का आखिर जिम्मेदार कौन?

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी और भीड़-भाड़ के बीच भगदड़ एक सामान्य घटना बनती जा रही है। कभी धार्मिक सभाओं के आयोजन, रेल में चढ़ते वक्त, तो कभी मंदिरों में भगदड़ से लोगों की जान जा रही है। मगर, चिंता की बात है कि इन घटनाओं से कहीं कोई सबक नहीं लिया जाता। हर बार गहन जांच, सख्त कार्रवाई और भविष्य में एहतियाती उपाय करने के दावे तो किए जाते हैं, लेकिन नतीजा ढाक के तीन पात वाला ही रहता है।

उत्तराखंड के हरिद्वार में मनसा देवी मंदिर क्षेत्र में रविवार को भगदड़ में आठ श्रद्धालुओं की मौत इसी लापरवाही का नतीजा है। हैरत की बात है कि इससे अगले ही दिन उत्तर प्रदेश में बाराबंकी जिले के अवसानेश्वर मंदिर में भी ऐसी ही घटना में दो लोगों की मौत हो गई। ऐसा लगता है कि भगदड़ का एक सिलसिला शुरू हो गया है और व्यवस्थागत खामियों की सिलवटें हैं कि ठीक होने का नाम ही नहीं ले रही हैं।

पिछले दिनों महाकुंभ में भगदड़ मचने से अनेक लोग मारे गए। इसके बाद बंगलुरु में आरसीबी की जीत के जश्न में आयोजित समारोह में भगदड़ से कई लोगों की जान चली गई। इससे पहले हाथरस के एक आश्रम में हुई भगदड़ की घटना को भी नहीं भूलाया जा सकता। सवाल है कि आखिर ऐसी कितनी घटनाओं के बाद शासन और प्रशासन चेतेगा? मनसा देवी मंदिर में भगदड़ का कारण करंट फैलने की अफवाह को बताया जा रहा है। मगर, क्या इस तरह की अफवाह को हादसे में तब्दील होने से रोका नहीं जा सकता था? प्रशासनिक अमला इस तरह की आशंकाओं का अनुमान लगाने में इतना अक्षम क्यों है? ऐसी घटनाएँ देश भर में धार्मिक स्थलों और सार्वजनिक समारोहों में घातक भगदड़ की श्रृंखला में नवीनतम है।मंदिरों, रेलवे स्टेशनों और महाकुंभ जैसे बड़े स्थानों पर हुई त्रासदियों में इस साल अब तक 80 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है।

गौरतलब है कि हरिद्वार के प्रसिद्ध मनसा देवी मंदिर में सावन के पवित्र अवसर पर घटी भगदड़ की घटना ने एक बार फिर हमारी व्यवस्थागत असफलताओं और भीड़ प्रबंधन की कमजोरी को उजागर कर दिया है। अफवाहों से उपजी यह त्रासदी महज़ एक आकस्मिक दुर्घटना नहीं थी, बल्कि वर्षों से चली आ रही लापरवाहियों और अनदेखियों का परिणाम है। यह पहली बार नहीं है, जब किसी धार्मिक स्थल पर भीड़ बेकाबू हुई हो और निर्दोष श्रद्धालुओं को अपनी जान गंवानी पड़ी हो। हर बार ऐसी घटनाओं के बाद प्रशासनिक हलचल तो होती है, परंतु समय के साथ सबक भुला दिए जाते हैं और वही चूक दोहराई जाती है। धार्मिक आयोजन, विशेष अवसरों और मेलों में लाखों की संख्या में श्रद्धालु एकत्र होते हैं। भीड़ का यह स्वाभाविक संकेंद्रण प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती बन जाता है। क्राउड मैनेजमेंट या भीड़ नियंत्रण कोई नया मुद्दा नहीं है, लेकिन भारत जैसे देश में, जहां आस्था के नाम पर लोगों का एक अपार जनसैलाब स्वतःस्फूर्त रूप से उमड़ता है, वहां इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

वास्तविकता यह है कि अधिकतर धार्मिक आयोजनों में भीड़ का कोई सटीक पूर्वानुमान नहीं लगाया जाता। लोग कितनी संख्या में आएंगे, कब आएंगे, किस मार्ग से प्रवेश करेंगे और किस दिशा से बाहर निकलेंगे, यह सब अक्सर नियोजन के अभाव में अधर में रहता है। ऐसे में, किसी भी छोटी-सी अफवाह, धक्का-मुक्की या अप्रत्याशित स्थिति से भगदड़ जैसी त्रासदियां जन्म लेती हैं। पिछले एक वर्ष के भीतर ही कई बड़े हादसे यह सिद्ध कर चुके हैं कि हमारी प्रशासनिक तैयारी, तकनीकी व्यवस्था और जन-जागरूकता गंभीर रूप से अपर्याप्त हैं। जुलाई 2024 में हाथरस में एक विशाल धार्मिक आयोजन के दौरान आयोजक भीड़ का अनुमान नहीं लगा पाए। अफरा-तफरी मची और 121 लोगों की मौत हो गई। यह त्रासदी इसलिए और भयावह रही, क्योंकि आयोजक और स्थानीय प्रशासन, दोनों ही न तो आयोजन स्थल का निरीक्षण कर पाए और न ही पर्याप्त निकास मार्ग सुनिश्चित कर सके।

इसी तरह, जनवरी 2025 में तिरुपति के मंदिर के टोकन वितरण केंद्र पर अचानक भीड़ उमड़ पड़ी और व्यवस्थाएं चरमरा गईं। पुलिस हालात संभालने में असफल रही और छह लोगों की जान चली गई। ऐसे में, सवाल यह है कि टोकन वितरण जैसे डिजिटल रूप से नियंत्रित कार्य में भी इतनी भीड़ कैसे इकट्ठी हो गई? इसी साल, 2025 में महाकुंभ और नई दिल्ली रेलवे स्टेशन में भी ऐसा हादसा हुआ। मौनी अमावस्या के अवसर पर प्रयागराज में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के बीच हुए हादसे और फिर दिल्ली रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों की देरी व प्लेटफॉर्म पर लोगों की संख्या अधिक होने से हुई भगदड़, ये दोनों उदाहरण धार्मिक आयोजनों और रोजमर्रा की भीड़भाड़ दोनों में प्रशासनिक नाकामी के परिचायक हैं।ऐसी घटनाएँ अव्यवस्था, खराब मार्ग व्यवस्था और एकल निकास प्रणाली की ओर संकेत करती है।

इन सभी घटनाओं की गहराई में जाएं, तो तीन मुख्य कारक बार-बार सामने आते हैं। पहला, अफवाह और सूचना का अभाव। जब भीड़ में किसी ने कुछ चिल्लाया, जैसे सांप है, धमाका हुआ या बिजली गिरी, तब बेकाबू स्थिति बनती है। अफवाहों को रोकने और सही सूचना समय पर देने की व्यवस्था लगभग न के बराबर होती है। दूसरा, अपर्याप्त मार्ग और निकास व्यवस्था। दरअसल, कई धार्मिक स्थलों पर मार्ग अत्यंत संकरे होते हैं, चढ़ाई-उतार होती है, मार्गों की संख्या सीमित होती है और निकास व प्रवेश एक ही रास्ते से होते हैं, इससे बेतरतीब भीड़ और जानलेवा दबाव उत्पन्न होता है, और तीसरा अधूरी और यांत्रिक प्रशासनिक तैयारी, प्रशासन के स्तर पर की गई तैयारियां अक्सर सिर्फ कागजों तक सीमित रहती हैं। जब वास्तविकता का सामना होता है तो सारी योजना चरमरा जाती है।

इस समय यह आवश्यक हो गया है कि धार्मिक आयोजनों और भीड़-भाड़ वाले स्थलों पर एक व्यापक और व्यावहारिक भीड़ नियंत्रण नीति लागू की जाए।रियल-टाइम मॉनिटरिंग और तकनीकी निगरानी जरूरी रूप से हो। जैसे एयरपोर्ट या बड़े खेल स्टेडियम में कैमरे, सेंसर और एआई आधारित मॉनिटरिंग होती है, उसी तरह धार्मिक स्थलों पर भी ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए। लोगों की संख्या का लाइव ट्रैकिंग, सीसीटीवी विश्लेषण और भीड़ की गति पर नजर रखकर स्थिति को समय रहते संभाला जा सकता है। पूर्वानुमान और आंकड़ों पर आधारित तैयारी हो, श्रद्धालुओं की संभावित संख्या का अनुमान ऐतिहासिक आंकड़ों और मौसम-त्योहारों के कैलेंडर को ध्यान में रखते हुए लगाया जाना चाहिए। फिर उसी हिसाब से पुलिस बल, मेडिकल टीम, फायर ब्रिगेड, वाटर-लॉजिस्टिक्स और निकास प्रणाली तैयार की जाए।

मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास हो, सभी प्रमुख धार्मिक स्थलों और आयोजनों के लिए न्यूनतम मानक तय किए जाने चाहिए, जैसे चौड़ाई, प्रवेश व निकास मार्ग की संख्या, संचार व्यवस्था, ऑडियो-वीडियो सूचना प्रणाली, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र आदि। जन-जागरूकता अभियान चलाया जाए, श्रद्धालुओं को यह बताया जाना आवश्यक है कि भीड़ में कैसे चलना है, क्या नहीं करना है, अफवाहों पर कैसे प्रतिक्रिया नहीं करनी है, क्या संकेतों पर ध्यान देना है। छोटे-छोटे वीडियो, रेडियो संदेश, मंदिरों में पोस्टर, स्थानीय टीवी पर प्रचार, ये सब मददगार हो सकते हैं। इसके अलावा, कानून निर्माण और जवाबदेही तय की जानी चाहिए।

कर्नाटक सरकार ने आरसीबी इवेंट हादसे के बाद एक 'क्राउड मैनेजमेंट बिल' लाने की प्रक्रिया शुरू की है। ऐसा ही हर राज्य को करना चाहिए। इस कानून में आयोजकों, स्थानीय प्रशासन, पुलिस और अन्य विभागों की जिम्मेदारियां स्पष्ट रूप से तय की जानी चाहिए, ताकि दुर्घटना के बाद सिर्फ मुआवज़ा बांटने और जांच बैठाने तक सीमित प्रतिक्रिया न हो। भारत में आस्था की शक्ति अपार है। यह लोगों को जोड़ती है, आंदोलित करती है, प्रेरित करती है, लेकिन जब यही आस्था लापरवाही के कारण जानलेवा बन जाए, तब यह चिंता का विषय बन जाती है। मनसा देवी मंदिर की घटना हो या कुंभ के मेले की, हमें समझना होगा कि धार्मिक स्थल और आयोजन अब सिर्फ आध्यात्मिकता के केंद्र नहीं, बल्कि व्यवस्थात्मक परीक्षण की कसौटी बन गए हैं।

कुल मिलाकर, हर बार हादसे के बाद बयान आते हैं, मुआवज़े घोषित होते हैं, जांच आयोग गठित होते हैं, लेकिन फिर वही दोहराव, वही लापरवाही। ज़रूरत इस बात की है कि अब हम सिर्फ प्रतिक्रिया न दें, बल्कि पूर्व-क्रियाशील नीति अपनाएं। हर आयोजन को एक परियोजना की तरह देखें, जिसमें लक्ष्य सिर्फ धार्मिक रस्म अदायगी नहीं, बल्कि प्रत्येक सहभागी की सुरक्षित वापसी भी हो। श्रद्धा और सुरक्षा का संतुलन तभी बन सकेगा, जब नीति, तकनीक, प्रशासन और जनता, चारों एक साथ जागरूक, उत्तरदायी और समन्वित होकर काम करेंगे।

अशोक भाटिया

रजिस्टर्ड पोस्ट का अंत: भरोसे की वह मुहर अब नहीं रहेगी

कोलफील्ड मिरर 05 अगस्त 2025: डाकिए की साइकिल की घंटी, थैले से झाँकते पत्रों की उत्सुक प्रतीक्षा, और रजिस्टर्ड डाक की पावती पर हस्ताक्षर का रोमांच—ये पल भारतीयों के दिलों में एक युग की तरह अमर हैं। लेकिन अब यह युग समाप्त होने जा रहा है। भारतीय डाक विभाग ने 1 सितंबर, 2025 से अपनी 50 साल पुरानी रजिस्टर्ड पोस्ट सेवा को बंद करने का ऐलान किया है, जिसे अब स्पीड पोस्ट में समाहित कर दिया जाएगा। यह निर्णय केवल एक सेवा का अंत नहीं, बल्कि लाखों लोगों की भावनाओं, यादों, और विश्वास से जुड़े एक इतिहास का समापन है। रजिस्टर्ड पोस्ट, जो कभी नौकरी के नियुक्ति पत्र, कानूनी नोटिस, या प्रियजनों के बधाई संदेशों का वाहक थी, अब केवल स्मृतियों में सिमट जाएगी। यह सेवा न केवल दस्तावेजों को जोड़ती थी, बल्कि यह भारत के ग्रामीण और शहरी जीवन की धड़कन थी, जो अब हमेशा के लिए थम जाएगी।

रजिस्टर्ड पोस्ट का इतिहास ब्रिटिश काल से शुरू होता है, जब इसे औपनिवेशिक शासन ने महत्वपूर्ण दस्तावेजों की सुरक्षित डिलीवरी के लिए शुरू किया था। यह सेवा अपनी विश्वसनीयता और कानूनी मान्यता के लिए जानी जाती थी। अदालतों में इसके जरिए भेजे गए दस्तावेज साक्ष्य के रूप में स्वीकार किए जाते थे, और सरकारी विभागों, बैंकों, और शैक्षणिक संस्थानों ने इसका भरपूर उपयोग किया। 2024-25 की भारतीय डाक विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, देश भर में लगभग 9.8 करोड़ रजिस्टर्ड डाक आइटम भेजे गए, जो इस सेवा की व्यापक लोकप्रियता को दर्शाता है। पावती सहित डाक (एकनॉलेजमेंट ड्यू) की सुविधा ने इसे और भी भरोसेमंद बनाया, क्योंकि प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर डिलीवरी की पुष्टि करते थे। यह सेवा उन दिनों की याद दिलाती है, जब डाकिया किसी संदेशवाहक से कम नहीं था, जो खुशी, उम्मीद, और कभी-कभी उदासी के पत्र लेकर घर-घर पहुंचता था।

डिजिटल युग के आगमन और निजी कूरियर सेवाओं के बढ़ते दबदबे ने डाक विभाग को अपने परिचालन को पुनर्गठित करने के लिए प्रेरित किया है। सरकार का तर्क है कि रजिस्टर्ड पोस्ट को स्पीड पोस्ट में मिलाने से परिचालन अधिक कुशल होगा, ट्रैकिंग प्रणाली बेहतर होगी, और ग्राहकों को तेज सेवा मिलेगी। स्पीड पोस्ट, जो 1986 में शुरू हुई थी, अपनी त्वरित डिलीवरी और उन्नत ट्रैकिंग के लिए पहले ही प्रसिद्ध है। भारतीय डाक विभाग के 2025 के आंकड़ों के अनुसार, स्पीड पोस्ट की ट्रैकिंग प्रणाली 99.97% सटीक है, और यह सेवा 230 से अधिक देशों में अंतरराष्ट्रीय डिलीवरी प्रदान करती है। इसके विपरीत, रजिस्टर्ड पोस्ट की ट्रैकिंग सुविधा अपेक्षाकृत सीमित थी और यह मुख्य रूप से घरेलू डिलीवरी तक ही प्रभावी थी। डाक विभाग का दावा है कि इस एकीकरण से वार्षिक परिचालन लागत में 12% की कमी आएगी, जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग हो सकेगा।

निश्चित रूप से, इस बदलाव का आर्थिक असर आम आदमी पर पड़ना अवश्यंभावी है। रजिस्टर्ड पोस्ट, अपनी किफायती दरों के लिए लोकप्रिय, अब चुनौती बन सकती है। इसकी शुरुआती फीस 25.96 रुपये है, जिसमें प्रति 20 ग्राम या उसके हिस्से पर 5 रुपये अतिरिक्त लगते हैं। दूसरी ओर, स्पीड पोस्ट की शुरुआत 50 ग्राम तक के लिए 41 रुपये से होती है, जो दूरी और वजन के साथ बढ़ती जाती है—यह रजिस्टर्ड पोस्ट से 20-25% महंगी है। ग्रामीण भारत, जहां 1.56 लाख डाकघरों में से 89% (भारतीय डाक विभाग, 2025 वार्षिक रिपोर्ट) संचार का प्रमुख साधन हैं, वहां यह बदलाव छोटे व्यापारियों, किसानों और आम नागरिकों के लिए भारी पड़ सकता है। रजिस्टर्ड पोस्ट की सस्ती दरें लाखों लोगों के लिए वरदान थीं, लेकिन अब स्पीड पोस्ट की बढ़ी लागत ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर नया बोझ डाल सकती है।

इस निर्णय का भावनात्मक पहलू भी गहरा है। आज की पीढ़ी, जो ऐप-आधारित कूरियर सेवाओं और डिजिटल संचार की आदी है, शायद इस बदलाव को सामान्य माने। लेकिन पुरानी पीढ़ी के लिए रजिस्टर्ड पोस्ट केवल एक सेवा नहीं थी, बल्कि उनके जीवन की कहानियों का हिस्सा थी। डाकिए की वह साइकिल, जिसकी घंटी सुनकर बच्चे और बड़े उत्साह से दरवाजे की ओर दौड़ते थे, वह लाल डाक पेटी, जो प्रेम पत्रों से लेकर सरकारी सूचनाओं तक का गवाह थी, और वह पावती, जो विश्वास की मुहर थी—ये सभी अब केवल स्मृतियों में रह जाएंगे। रजिस्टर्ड पोस्ट ने न केवल दस्तावेज पहुंचाए, बल्कि यह उन पलों को भी जीवंत किया, जब लोग अपने प्रियजनों के पत्रों का इंतजार करते थे। यह सेवा उस समय की याद दिलाती है, जब संचार का मतलब केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि भावनाओं का एक सेतु था।

यह बदलाव भारतीय डाक विभाग की आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है, लेकिन यह एक ऐसी विरासत का अंत भी है, जो ब्रिटिश काल से लेकर स्वतंत्र भारत तक लोगों के जीवन का हिस्सा रही। रजिस्टर्ड पोस्ट का नाम अब डाक विभाग के रिकॉर्ड और लोगों की स्मृतियों में ही बचेगा। इस बदलाव के दीर्घकालिक प्रभाव अभी देखने बाकी हैं। क्या स्पीड पोस्ट रजिस्टर्ड पोस्ट की विश्वसनीयता और किफायती दरों को पूरी तरह प्रतिस्थापित कर पाएगी? क्या ग्रामीण भारत, जहां डिजिटल पहुंच अभी भी सीमित है, इस बदलाव को सहजता से स्वीकार कर पाएगा? ये सवाल समय के साथ जवाब पाएंगे। लेकिन एक बात निश्चित है—रजिस्टर्ड पोस्ट का अंत केवल एक डाक सेवा का बंद होना नहीं है, बल्कि यह उस विश्वास, उन यादों, और उस युग का समापन है, जो भारतीय डाक विभाग की आत्मा में बसा था। यह बदलाव हमें यह भी सिखाता है कि प्रगति की राह में हमें अपनी कीमती परंपराओं को अलविदा कहना पड़ता है, भले ही वह कितना ही कष्टकारी क्यों न हो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"
बड़वानी (मप्र)